RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30/-

प्रेरणा विचार

मासिक

कार्तिक - मार्गशीर्ष, विक्रम संवत् 2083 (नवम्बर-2026) पृष्ठ-36

गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

RSS @101



प्रेरणा विमर्श 2026 नारी शक्ति राष्ट्र वंदन यज्ञ व उद्घाटन समारोह की झलकियां

















प्रेरणा विचार

वर्ष -4, अंक - 11

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
अनिल त्यागी

प्रबंध निदेशक
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

सलाहकार मंडल
श्याम किशोर

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

पृष्ठ सज्जा
वीरेन्द्र पोखरियाल

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क्स प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में



श्री विजयादशमी उत्सव नागपुर 05



एशियन गेम्स 2026 भारतीय खेलों का नया सूर्योदय 14



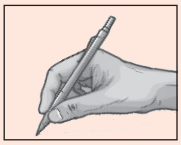
आत्मनिर्भरता सफलता की पहली सीढ़ी 27

- पंजाब में धर्मांतरण और बदलती जनसांख्यिकी 12
- हिंद दी चादर.....16
- प्रेरणा विमर्श-2026.....18
- भारतीय युवा की नई क्रांति विरोध नहीं, राष्ट्रनिर्माण.....20
- सर्दियों में श्वसन संबंधी समस्याएं एवं बचाव.....22
- भारत में ब्याज दरों में बढ़ोतरी का चक्र प्रारम्भ.....24
- प्रकृति : दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा.....26
- संविधान की किताब चुनावी सपने और बेताल का सवाल 28
- उत्सवों में नदियां धर्म से नहीं जीवन से जुड़ी हैं.....30
- धनतेरस-दिवाली 2026 : उच्च गुरु का गोचर खोलेगा विवाह, संतान और सफलता के द्वार!.....32
- आत्मनिर्भरता के समाचार.....34

जननी जन्मभूमिश्च

श्रीराम का राष्ट्रप्रेम और धर्म-स्थापना का संकल्प

भारत दीपावली के प्रकाश से सराबोर है। प्रकाश का यह पर्व प्रतिवर्ष मानव जाति को स्मरण कराता है कि, किस तरह मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम अधर्म एवं कुरीतियों के प्रतीक दशानन रावण का वध करके विभीषण को लंका का राज सौंप अयोध्या लौट रामराज्य की नीव डालते हैं। वही रामराज्य, जिसे महात्मा गांधी समाज में शांति, समृद्धि एवं उन्नति की अभिव्यक्ति करने वाला दैवीय राज्य कहते थे और जो आज भी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्थाओं के मानक के रूप में स्थापित है। विशेषतः भारत में जब भी बात सुशासन, मर्यादा, धर्म-परायणता एवं नैतिक संघर्ष की होती है, उसका आदर्श रामराज्य और नायक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ही रहते हैं। श्रीराम के नायकत्व के अनगिनित विशिष्ट पहलुओं में एक यह है कि उन्होंने शोषित, वंचित एवं आदिवासियों की मदद से अजेय समझे जाने वाले रावण का अंत कर मानवता को यह संदेश दिया कि जनता में सदैव अनैतिक राजसत्ता को ध्वस्त करने की क्षमता होती है। यूं तो राजतंत्रीय व्यवस्था में राम, दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र होने के आधार पर अयोध्या के स्वाभाविक राजा थे। किन्तु उनके संकल्प, 'निसिचर हीन करउँ महि, भुज उठाइ पन कीन्ह' और लक्ष्मण के साथ संवाद, 'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' से स्पष्ट है कि उनकी लंकाविजय भूमि अथवा राज्यवृद्दि के लिए नहीं अपितु निशाचरों का संहार और पृथ्वी पर धर्म की स्थापना कर स्वयं को राजा बनने योग्य सिद्ध करने के लिए थी।



श्रीराम के नायकत्व के अनगिनित विशिष्ट पहलुओं में एक यह है कि उन्होंने शोषित, वंचित एवं आदिवासियों की मदद से अजेय समझे जाने वाले रावण का अंत कर मानवता को यह संदेश दिया कि जनता में सदैव अनैतिक राजसत्ता को ध्वस्त करने की क्षमता होती है। यूं तो राजतंत्रीय व्यवस्था में राम, दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र होने के आधार पर अयोध्या के स्वाभाविक राजा थे। किन्तु उनके संकल्प, 'निसिचर हीन करउँ महि, भुज उठाइ पन कीन्ह' और लक्ष्मण के साथ संवाद, 'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' से स्पष्ट है कि उनकी लंकाविजय भूमि अथवा राज्यवृद्दि के लिए नहीं अपितु निशाचरों का संहार और पृथ्वी पर धर्म की स्थापना कर स्वयं को राजा बनने योग्य सिद्ध करने के लिए थी।

परंतु वर्तमान में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का लगातार ह्रास दिख रहा है। श्रीराम द्वारा स्थापित आदर्श आज तार-तार होते दिख रहे हैं। जो भाषा एक सामान्य अशिक्षित नागरिक से भी अपेक्षित नहीं है, देश के प्रमुख गणमान्य एवं मर्मज्ञ व्यक्ति उसका उपयोग प्रधानमंत्री एवं संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों के लिए कर रहे हैं जैसे, प्रधानमंत्री की तुलना जहरीले साँप से करना, गंगा में डुबकी यह कहकर निरर्थक बताना कि क्या इससे गरीबी समाप्त हो जाएगी, मोदी का बाप भी जाएगा, हिन्दू कहने वालों को चौबीसों घंटे हिंसा और नफरत फैलाने वाले बताना, भारत में नेपाल, बांग्लादेश एवं श्रीलंका दोहराने की बात करना और सुप्रीम कोर्ट तथा चुनाव आयोग पर चढ़ाई जैसी स्थिति पैदा करना आदि। उपरोक्त प्रयासों को फ्रांस और इटली जैसे देशों में भड़की हिंसा तथा डीप स्टेट की संलिप्तता की खबरों के प्रकाश में यदि देखें तो सतर्क रहने की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। जिस तरह रीजीम बदलने की धमकी दी जा रही है और अराजक दृश्य पैदा किए जा रहे हैं, उससे लगता है कि कुछ बाहरी शक्तियां भी भारत के प्रजातन्त्र को कुचलने का कुचक्र कर भारत के विकास को बाधित करना चाहती हैं। एकाएक भारत एवं चीन जैसे देशों को स्वयं मना करने वाले अमेरिका की यह घोषणा कि अब वह स्वयं रूस से तेल खरीदेगा और साथ ही रुस से तेल खरीदने वाले अन्य देशों पर अतिरिक्त टेरिफ नहीं लगाएगा, आश्चर्यचकित करने वाली है।

आज भारतीयों को कृष्ण जैसे उसी मार्गदर्शन की जरूरत है जिसके बाद अर्जुन ने श्रीकृष्ण को गीतोपदेश के अंत में बताया था कि, 'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा, त्वत्प्रसादान्मयाच्युत। स्थितोऽस्मि गतसंदेहः करिष्ये वचनं तव ।। अर्थात जब अर्जुन कहता कि मेरा मोह नष्ट हो गया है और मुझे मेरा खोया हुआ ज्ञान वापस मिल गया है। अब मैं पूरी तरह संशयरहित होकर अपने स्वरूप में स्थित हूँ। आप जो कहेंगे, मैं आपकी उसी आज्ञा का पालन करूँगा।

श्री विजयादशमी उत्सव, नागपुर

(आश्विन शु. 10 युगाब्द 5128 – मंगलवार दिनांक 20 अक्तूबर 2026)

श्री विजयादशमी उत्सव 2026 के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी द्वारा दिया गया उद्‌बोधन।



राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी के कार्यक्रमों के समापन के अवसर पर विजयादशमी उत्सव मनाने के लिए हम आज यहां एकत्रित हैं। यह वर्ष संत शिरोमणि रविदास जी महाराज के 650 वे जन्म जयंती वर्ष के निमित्त कार्यक्रमों का वर्ष है। संघ शाखाओं में भी इस अवसर पर संत रविदास जी के जीवन और कार्य की जानकारी देने वाले कार्यक्रम हो रहे हैं। उनके द्वारा परिश्रम, तपस्या, त्याग, व स्वयं के जीवन के उदाहरण से समाज में भक्ति, स्वधर्मनिष्ठा तथा सामाजिक समरसता का भाव जागरण, ऐसे समय किया गया, जब देश विदेशी आक्रान्ताओं के एतद्देशीय धर्म को मानने वाले देशवासियों पर अत्याचार से पीड़ित था। स्वयं के उपदेश तथा जीवन से संत रविदास जी की दी हुई सीख आज भी हम सबके लिए प्रेरक तथा पथदर्शक है। स्वधर्म रक्षा के लिए ही जिन महापुरुषों ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया ऐसे दो महापुरुषों के भी स्मरण का यह वर्ष है। आर्यसमाज के तपस्वी संन्यासी, प्रखर धर्माभिमानी, ज्ञानी शिक्षाविद्, वीर स्वातंत्र्यसेनानी तथा शुद्धि आन्दोलन के जनक स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान को 100 साल पूरे हुए। उत्कल के वन प्रदेश में स्वयं रहकर जिन्होंने वहां के अपने समाज की निरूस्वार्थ सेवा की और वहीं पर अपना बलिदान भी दिया ऐसे स्वामी लक्ष्मणानंद सरस्वती जी महाराज की भी जन्म शताब्दी चल रही है। महात्मा फुले जी का भी 200वां जन्म जयंती वर्ष पिछले 11 अप्रैल से शुरू हो गया है। जिस स्व की रक्षा के लिए इन महापुरुषों के बलिदान हुए, उसी आत्मबोध को समाज में स्वदेशी मेलों के द्वारा जागृत करने का प्रयास करने वाले 'हिन्दू मेला' के प्रेरक व प्रवर्तक, बंग भूमि के स्वर्गीय श्रीमान राज नारायण बसु के भी जन्म का 200वां वर्ष चल रहा है ।

संघ का कार्य भी गत 100 वर्षों से भारत को इसी स्व के, अस्मिता के, मजीवे के आधार पर संगठित व बलसंपन्न करने के लिये चला है । संघ की शतकपूर्ति के उपलक्ष्य में, जीवनपरिवर्तन की कारक जिन पांच पहलों को, पहले स्वयंसेवकों में प्रवर्तित किया गया व बाद मे समाज में स्वयंसेवक प्रवर्तित करेंगे, उन में एक यही स्व का बोध व स्वदेशी के आचरण की पहल है।

अपने 'स्व' बोध की नींव : हमने अपने देश के संविधान में अपने आप को एक प्रजा के रूप मे, विविधता के बावजूद भावनात्मक दृष्टि से एकरस समाज के रूप में, 'हम भारत के लोग' ऐसा, संबोधित किया है। उस भावनात्मक बंधन को उत्तरोत्तर दृढ़ बनाते जाने का दिग्दर्शन भी स्पष्ट शब्दों में उसी संविधान के मार्गदर्शक तत्त्वों में है। उस भावनात्मक बंधन को जिस तत्व की प्रत्यक्ष अनुभूति जन्म देती है, वह अनुभूति तथा उसे स्पष्ट करने वाला विश्व का सर्वोत्कृष्ट तत्वज्ञान हमारे पास होनेपर भी; हमारा व्यवहार उससे एकदम अलग और निकृष्ट हुआ। इसीलिए विश्वगुरु पद से हम इतने नीचे गिरते आए कि अनेक शतकों तक हमें गुलामी झेलनी पड़ी। अनेक भीमप्रयासों से तथा बलिदानों से उन दुर्दिनों से मुक्त होकर अब हम फिर एक बार अपनी एकता व प्रगति की राह पर चल पड़े हैं। इसलिए हमें अपनी विस्मृति को दूर कर उस तत्व को भी स्पष्ट रूप से समझना पड़ेगा, मन से स्वीकार करना पड़ेगा तथा उसके अनुरूप गुणवत्ता का स्वयं के जीवन के सभी आयामों में निर्माण करना पड़ेगा । देश की स्वाधीनता के लिये जितनी तपस्या व समर्पण हुआ उससे कहीं अधिक की आवश्यकता अब पड़ेगी, यह परिस्थिति को हम देखते हैं तो ध्यान में आता है ।

भारत जैसे, मत, पंथ, संप्रदाय, प्रान्त, जाति, भाषा, खानपान, रीतिरिवाज, आदि विविधताओं से भरपूर देश में जो विचार इन सभी को स्वीकार करता है, सम्मान देता है, अपनेपन से देखता है, वही हमारी एकता का आधार बन सकता है। सौभाग्य से भारत में सनातन काल से चलती आई परम्परा, जो अनेक आध्यात्मिक महापुरुषों की

प्रत्यक्ष अनुभूतियों से निरन्तर स्पष्ट व पुष्ट होती आयी है, वह हमें बताती है कि सृष्टि की विविधता जितनी स्वाभाविक परन्तु परिवर्तनशील है उतनी ही सम्पूर्ण अस्तित्व की एकता शाश्वत, अटल व अचल सत्य है । मनुष्य विचारशील प्राणी होने के नाते उस एकता को स्वयं में तथा जगत में अनुभव कर सकता है । यह करने से ही शाश्वत व नित्य सुख के खोज की जीवमात्र की यात्रा सफल व पूर्ण होती है।

"इसी सत्य को विविध पक्ष से
वेदों में हमने गाया था,
निकट बिठाकर इसी तत्व को
उपनिषदों में समझाया था ।
मंदिर - मठ - गुरुद्वारे जाकर
यही ज्ञान सत्संग मिलेगा"

सभी विविधताओं का सम्मान, स्वीकार, करते हुए उन को संरक्षण देने का भारत का स्वभाव तथा जो परिवर्तनीय एवं/अथवा कालविसंगत है उसे बदलते रहने का लचीलापन इसी सनातन दृष्टि का परिणाम है। जब-जब भारत के जनों में यह भाव सर्वोच्च रहा तब-तब भारत विश्व का सभी दृष्टि से आदर्श राष्ट्र रहा। जब आत्मविस्मृति, विघटन व परस्पर संपर्क टूटने के कारण हम बलहीन, संकुचित, अहंकारी अथवा भयग्रस्त हो गये, हमने इस आचरण को त्याग दिया, तब हमारी दुर्गति हुई। हमें अपने अस्तित्व व अस्मिता के इस आधार को फिर से स्मरण करते हुए संगठित व परस्पर हित के लिए कटिबद्ध होना होगा ।

संघ शताब्दी के कार्यक्रम : शताब्दी के निमित्त संघ की शाखाओं के व स्वयंसेवकों के संपर्क के विस्तार के लिए कार्यक्रम किये गए। साथ साथ देश में तथा विश्व में भी भारत, हिन्दू व संघ के बारे में व्यापक प्रबोधन की योजना को भी क्रियान्वित किया गया। कार्यक्रमों का अबतक प्राप्त हुआ वृत्त इस प्रकार है- संपर्क अभियान -4,61,527 ग्रामों एवं 41,076 नगरीय बस्तीयों में 10,19,88,511 घरों में संपर्क किया गया। प्रबुद्ध नागरिक गोष्ठी -1,117 जिलों में हुए गोष्ठियों में 4,26,497 नागरिक (महिला + पुरुष) उपस्थित रहे। सद्भावना बैठक-5,036 खण्डों में संपन्न हुई। हिन्दू सम्मलेन- 34,187 मंडलों में समपन्न हुए। युवा सम्मेलनों में 39,25,225 युवा उपथित रहे।

संघ के कुछ कार्यकर्ताओं के प्रवास पश्चिम के तथाकथित विकसित देशों में भी वहां के समाजों में भारत, हिंदुत्व तथा संघ के बारे में सही जानकारी देने की दृष्टि से हुए। वहां भी हमारी सनातन, सर्वसद्भावी भारतीय संस्कृति, हिन्दुसमाज की सर्वसमावेशकता, तथा संघ के उद्देश्य व कार्य की सही व सत्य जानकारी सब के सम्मुख रखी गयी। विश्व में भारत के प्रति एक कुतूहल जाग रहा है। जड़वाद, व्यक्तिवाद तथा संयम रहित उपभोग पर आधारित अधूरी दृष्टि के कारण भौतिक दृष्टि से सम्पन्न होते हुए भी वे देश चिंता में हैं। विविधताओं को कैसे संभालना, विकास व पर्यावरण को कैसे साथ चलाना, जो अपने जैसे नही हैं उनसे अपनेपन से कैसे बरतना, कुटुंबजीवन के तथा नई पीढ़ियों में संस्कारों के क्षरण को कैसे रोकना आदि समस्याओं का उत्तर उनके पास नहीं है। इसीलिए विश्व आज भूराजनैतिक तनावों के, आर्थिक अनिश्चितता के, पर्यावरणीय संकट के और वर्चस्व की लड़ाई में विनाश को देख रहा है। भारत के पास इन सब समस्याओं के सारे उत्तर हैं यह वे जानते हैं। इस लिए हमारे कार्यकर्ताओं के कथनों को वहां अच्छी तरह सुना गया, व चर्चाएं भी चल पड़ी हैं। देश में तथा विश्व में शताब्दी के निमित्त प्रारम्भ हुआ सब प्रकार का संवाद आगे भी सतत व निरंतर चलता रहे ऐसी योजना बनाने में कार्यकर्ता लगे हैं।

पंच परिवर्तन की पाँचों पहलों का यथा -समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण, स्व बोध व स्वदेशी और नागरिक अनुशासन समाज के सभी वर्गों तथा स्तरों में स्वागत हुआ है। विश्व के अन्य देशों में भी इसकी आवश्यकता अनुभव की गयी है। यह केवल एक वर्षभर का कार्यक्रम नहीं अपितु जीवन में आचरण का परिवर्तन लाने वाली व्यवहार की शैली है। प्रत्यक्ष कृति से आदत व आदतों से स्वभाव बनाने वाले यह कार्य जीवन के सभी आयामों में सतत चलाने होंगे, तब परिवर्तन आयेगा। हमारे समाज में संस्कारों के द्वारा इस प्रकार के, विश्व की धारणा करने वाले धार्मिक जीवन की आदतों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाया जाता रहा है ।

विवेकशील आचरण की आवश्यकता : वर्तमान काल में परिवार के बड़ों से, विद्यालयों के पाठ्यक्रम से अथवा समाज के वातावरण से यह संस्कार मिलना दिन-प्रतिदिन कम हो रहा है। विज्ञान और तकनीकी की प्रगति के कारण सब प्रकार की जानकारी, समाचार समाज माध्यमों के द्वारा सबको मिलती है। अनेक देशों में नई पीढ़ी को उन माध्यमों से मिलती हुई जानकारी बिना उचित-अनुचित का विवेक किये नई पीढ़ी ग्रहण करती है। उसके दुष्परिणामों का अनुभव ले चुकने के बाद उन देशों ने उन माध्यमों पर कुछ अनुशासन और निर्बंध लागू किये है। हमारे अपने देश में भी इस प्रकार की आवश्यकता, विशेषत : 'OTT platforms' को लेकर, समाज में अनुभव की जा रही है। शासन प्रशासन को इसका विचार करना चाहिये। साथ ही जानकारी स्वरूप में मिलती हो तो भी उचित-अनुचित का विवेक करना नई पीढ़ी को सिखाना पड़ेगा। उस विवेक के अनुपस्थिति के कारण व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामाजिक जीवन में कई प्रकार के दुष्परिणाम देखने को मिलते है। इस विवेक के अभाव में ही विश्वभर में नई पीढ़ी नशीली दवाओं की आदत की शिकार हो रही है। नशा एक गंभीर राष्ट्रीय समस्या है और उसके परिहार के लिए समय रहते शासन-प्रशासन तथा समाज को प्रयास प्रारम्भ करने चाहिए। समाज की वर्तमान अभिभावक पीढ़ी को यह विवेक नई पीढ़ी को देना पड़ेगा व नई पीढ़ी को अपनेआप को ऐसी आदत निर्माण करने वाले सभी प्रवृत्तियों से दूर रखना पडेगा। इस दृष्टि से भारत में इस समस्या का निराकरण करने वाले सभी को साथ

लेकर देशभर में इस समस्या का निदान करने वाला एक देशव्यापी प्रतिरोध खडा हो इसलिए स्वयंसेवक प्रयास करेंगे।

आने वाले समय में परमवैभव संपन्न विश्वगुरु भारत के निर्माण का बड़ा दायित्व नई पीढ़ी के कंधे पर ही आने वाला है। इस चुनौती को स्वीकार कर सफलता पूर्वक उसका उत्तर देने के लिए हमारे युवाओं को सब प्रकार से सन्नद्ध होना चाहिए।

संतुलित व समग्र विकास की दृष्टि : विज्ञान और तकनीकी की प्रगति मनुष्यों को भौतिक दृष्टि से सुखी जीवन जीने में, जीवन में ज्ञान और तर्क के आधार पर अपने व्यवहार को निर्दोष करने में मदद करती है। इसलिए नए ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी का स्वागत और स्वीकार करना चाहिए। परन्तु यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि तकनीकी केवल साधन है। केवल उपभोगवादी अथवा जड़वादी दृष्टिकोण से विकास होता है तो सुख सुविधा के साथ उससे बड़ी हानि मोल लेनी पड़ती है। हाल ही में नेपाल में जिस भयंकर त्रासदी को झेलना पडा, हजारों मनुष्यों की बली चढ़ गयी, उसके मूल में कहीं ना कहीं सम्पूर्ण हिमालय के क्षेत्र में जो भारत, तिब्बत, भूटान, चीन ऐसे अनेक देशों से गुजरता है, में चले ऐसे एकांगी विकास का परिणाम है। इतनी बड़ी मात्रा में मनुष्य हानि का दुःख हम सभी को अनुभव होता है और त्रासदी के बाद के पीड़ितों को राहत पहुंचाना आदि कार्यों में तो हम सब लगते ही हैं परन्तु विकास की समग्र व संतुलित दृष्टि निर्माण होना आवश्यक है। साधन का योग्य दिशा में उपयोग करने वाला, उपयोग के औचित्य, अनौचित्य को तय करने वाला तो मनुष्य होता है। इसलिए ज्ञान के या तकनीकी के साथ-साथ ही उसका उचित उपयोग हो ऐसा विवेक और उसके उपयोग का नैतिक व भौतिक अनुशासन भी सीखकर आचरण में लाना चाहिए। अन्यथा परमाणुओं के रचना के ज्ञान से स्वच्छ ऊर्जा से ज्यादा जीवन संहारक अस्त्र निकलेंगे व कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे अत्यंत उपयोगी तंत्रज्ञान से भी मनुष्य को भ्रमित करने वाले, ठगने वाले, झूठ के उपक्रम निकलते रहेंगे।

भारत की सनातन, अपनी समग्रता व एकात्मकता के कारण बनी जीवन दृष्टि इसीलिए समन्वय व संयम के संस्कारों की संस्कृति को सम्पूर्ण विश्व में देखना चाहती है। उसको हमारे पूर्वजों ने 'सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा' ऐसा संबोधित किया है। भारत को इस दृष्टि के आधार पर समग्र, एकात्म विकास का अपना नया प्रतिमान उदाहरण के रूप में दुनिया के सामने खडा करना ही होगा।

हिन्दू भाव व हिन्दू स्वभाव - एकता का आधार : हमारे राष्ट्र की चेतना यही सनातन दृष्टि है जिसे आज हम भारत के लोगों सहित सारा विश्व हिन्दू दृष्टि के नाम से जानता है। कोई विशिष्ट पूजा पद्धति, कोई विशिष्ट खान-पान, रहन-सहन, कोई सामाजिक या राजनीतिक मतवाद किसी विशिष्ट जाति, भाषा, प्रान्त इस की अनिवार्यता इसमें नहीं हैं। इन सब से उपर आध्यात्मिकता, मानवता तथा विश्वबन्धुत्व ही इस के लक्षण हैं। भारतीयों में इस भाव के विद्यमान होने से ही 'भा' याने ज्ञान के प्रकाश में रत भारत यह भारतीयता की एक परिभाषा बनी है। पूरे विश्व को जोड़ सकने वाले व जोड़ना चाहने वाले इस हिन्दू भाव का स्मरण व पोषण भारत के प्रगति व एकता की अनिवार्य आवश्यकता है। भारत में इस भाव का रूप उत्कट भारत भक्ति, हम सभी भारतीयों में अपनी समान पूर्वज परंपरा का गौरव एवं आदर्श तथा भारत की सनातन संस्कृति के मूल्यबोध के अनुरूप स्वयं के जीवन को गढ़ते जाना यह है। प्राचीन काल से भारत भूमि पर निवास करने वाला जनसमूह इसी दृष्टि को लेकर एक समाज के नाते जीता आया है।

हम सभी भारतवासियों की एकता - स्वाभाविक व बिना शर्त : हम सब का परस्पर नाता व भारत के साथ सम्बन्ध यह एक जीवमान सम्बन्ध हैं जो हृदय का होने से बिनाशर्त है। 'तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहे न रहें' ऐसा एकतरफा है। अपनेपन के, आत्मीयता के अथवा रिश्ते-नातों के संबंधों में कोई शर्तें नही होती। बस, उन संबंधों के आधार पर पक्का रहना होता है। हमारे स्वाधीनता सेनानियों का राष्ट्र के प्रति ऐसा ही सम्पूर्ण बिनशर्त समर्पण रहा, तभी ब्रिटिश सरकार को भारत छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इसी हिन्दू भाव को जगाकर सम्पूर्ण समाज को एक सुसंगठित व बलसंपन्न समाज बनाने के लिए कार्य कर रहा है। व्यक्तिजीवन से विश्वजीवन तक की धारणा, प्रतिष्ठा तथा सुरक्षा भी बिना सामर्थ्य के संभव नही। अतएव संगठित व बलसंपन्न हिन्दूसमाज की बात करना या उसके लिए कार्य करना सर्व पंथ समादर की भावना अथवा राष्ट्र की भावनिक एकात्मकता के विरुद्ध नही है; हिंदू समाज का विचार व स्वभाव समावेशक होने के नाते ऐसा कार्य हम सब की भावनिक एकात्मता, सद्भावना व सदाचार का पोषक ही होगा यह बात समझनी चाहिए। पीढ़ी दर पीढ़ी मिलता रहा यह स्वभाव व संस्कार ही कैप्टेन स्मित मच्छार को अपनी प्राणों की बाज़ी लगाकर मनुष्यों के संरक्षण के लिए स्वयं को झोंक देने की प्रेरणा देता है।

सद्भावनापूर्ण व्यवहार आवश्यक : यह केवल विचार या वाणी की बात नहीं है। हम सभी के आचरण में यह भाव प्रकट होना चाहिए। हमारा भारत विशाल है। प्रकृति व पर्यावरण के विविध रूपों से सजा है। विविध पंथ, प्रान्त, भाषा, जाति, खानपान व रीति रिवाजों के मानने वाले समूहों से भरा बहुरंगी परंतु एक समाज है। परस्पर व्यवहार में, मन वचन कर्म में सद्भावना और अपनापन होना व दिखना चाहिए। गत काल के इतिहास से मनमे पड़ी एक दूसरे के प्रति आशंकाएं हमें दूर रखती है। इतिहास के उन तथ्यों को स्वीकार करते हुए भी गांठे सुलझ जाएँ, नयी न पड़े, ऐसा व्यवहार हमारा चाहिए। छोटी-छोटी बातों पर हमें उकसाकर झगड़े खड़े करने-कराने वाले लोगों से दूर रहना चाहिए। इतने बड़े व विविधतापूर्ण समाज में यह वातावरण उत्पन्न होने में समय लगेगा। परन्तु देश व विश्व के कल्याण की इच्छा रखने वाले सभी को धैर्यपूर्वक अपने आप को तथा समाज को सम्हालते हुए कार्य करते रहना पड़ेगा। समाज के लोगों से बरतते

हुए, हम सर्व साधारण व्यक्तियों से लेकर तो शासन-प्रशासन के लोगों तक, विशेषकर कोई विशिष्ठ अभियान अथवा नीति को समाज में लागू करने की बात होती है, तब अपना व्यवहार भद्र रहे, अपनेपन का रहे, नागरिक व्यक्तियों के सम्मान आदि का लिहाज करने वाला होना चाहिए यह ध्यान रखना चाहिए।

इधर-उधर घटने वाली कुछ अवांच्छित तथा/अथवा अप्रत्याशित घटनाओं को; जिन में संघ का न सम्बन्ध है न समर्थन; ले कर संघ की सद्भावना या हेतु की प्रामाणिकता पर संदेह उत्पन्न करने के प्रयास भी होते रहते है । संघ के कार्य का आधार शुद्ध सात्त्विक प्रेम है। संघ का कार्य स्वयंसेवकों के समर्पण एवं सेवा - परिश्रम के कारण चलता है। संघ को अपने स्वयं के लिए कुछ नहीं चाहिए। एक सत्य को लेकर उसकी प्रतिस्थापना के लिये श्रद्धा विश्वास पूर्वक स्वयंसेवक लक्ष्य पूर्ण होने तक कार्य करते रहेंगे।

आप सब की अच्छी तरह समझी इन बातों को इस लिए दोहरा रहा हूं क्योंकि समझदार लोग भी विचलित हों ऐसा वातावरण है अथवा खड़ा किया जा रहा है। भारत सहित सारे विश्व में जो भद्रता, मांगल्य, सांस्कृतिक व मानवीय संस्कार है, वह सारा नष्ट-भ्रष्ट, उद्ध्वस्त करने की आसुरी प्रतिज्ञा लेकर पश्चिम से एक आंधी चली है। विश्व भर के तथाकथित प्रगत देश भी उस से त्रस्त, असहाय है। परन्तु पिछले दशकों में भारत ने स्वयं की शक्ति तथा सुनीति के कारण विश्व में धीरे धीरे अपना स्थान बनाया है। भारत के समाज का पुरुषार्थ सुदृढ़ नीतियाँ, नेतृत्व, देशाभिमान तथा विश्व के प्रति अपने दायित्व के बोध की जागृति के कारण सभी क्षेत्रों में यशस्वी हो रहा है। भारत की इस प्रकार की प्रगति के कारण विश्व के राष्ट्रों में अराजकता खडी कर अपने स्वार्थों की पूर्ती के लिए सहाय्यक हो सकने वाले अपने पिट्ठुओं को वहां स्थापित करने का षडयंत्र करने वाली ताकतों के खेल बंद होंगे। इस वस्तुस्थिति को ये आसुरी ताकतें जानती हैं। इसलिए भारत ही उस का निर्णायक व सब से बलवान प्रतिस्पर्धी और अंतिम एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। भारत, हिंदू व संघ को किस प्रकार तोड़ सकते हैं (dismantling) इस का विचार कर योजना बना कर वे कार्य करती हैं। उन्हीं की प्रकृति के कुछ लोग इसमें उन्हें सहायता के लिये मिल जाते हैं। क्षुद्र सत्तास्वार्थ तथा विवेकहीनता के कारण कुछ महत्वाकांक्षी नेता लोग भी शामिल होते हैं। अपने इतने बड़े समाज में समस्याएँ तो हैं। व्यवस्था की कमियां भी ढेर सारी होंगी। उनके चलते आंदोलनों का होना भी स्वाभाविक ही है। परन्तु आंदोलन समाधान देने के लिए होने चाहिए। आन्दोलन करने वाला समाज का कोई समूह हो, शांति व सुव्यवस्था कायम रखने के लिए कार्यवाही करने वाला शासन-प्रशासन या राजनीतिक नेतागण हो, अपने एक अखंड समाज में हमारी करनी के कारण किसी प्रकार की अनबन, द्वेष, त्वेष, मलाल या विभाजन पैदा नहीं होना चाहिए, भावनाएं तीव्र होने पर भी हमारे संविधान कानून की मर्यादा में, बोल चाल चलन के भद्र व्यवहार के संकेतों की मर्यादा में हमारी कृतियाँ हों, यह ध्यान रखना चाहिए । वोट, सस्ती लोकप्रियता अथवा राजनीतिक लाभ का लोभ हमारे विवेक व सद्भावना पर हावी न हो यह चिंता करनी ही पड़ेगी।

समाज के उद्यम से समाधान : समाज की सब समस्याएं शासन ही सुलझा सकता है अथवा आन्दोलनों से ही समस्याएं सुलझती हैं ऐसा भी अनुभव नहीं है। समाज की सक्रियता व आपसी संवाद के आधार पर भी समस्याओं का समाधान निकल सकता है।

संघ के स्वयंसेवक समाज में इस प्रकार का सामाजिक उद्यम खड़ा करने का प्रयास करते हैं। ग्रामीण विद्यालयों को ध्यान में रखते हुए स्वयंसेवकों के ऐसे प्रयासों का अनुभव उत्साहवर्धक है। 21 प्रान्तों के 210 जिलों में लगभग 1296 विद्यालयों में यह देखा गया कि जहां ग्रामवासियों का सहभाग व स्वयंसेवकों का साथ रहा वहां छात्रों की उपस्थिति, सीखने का स्तर तथा अभिभावकों की सहभागिता में सुधार आया। समाज ने शिक्षा सहायता तथा आधारभूत सुविधाओं के साथ साथ खेल व सांस्कृतिक तथा मूल्य आधारित गतिविधियों में भी योगदान दिया। ग्रामवासियों के सम्मिलित प्रयासों के आधार पर गावों के समग्र विकास के प्रयास तो हजारों ग्रामों में चल ही रहे हैं। देश भर में स्वयंसेवकों द्वारा चलने वाले सभी सेवा कार्यक्रमों में अपने देशबंधुओं में स्वाभिमान, स्वावलम्बन तथा राष्ट्र के जीवन में सहयोग - सहभाग की भावना बलवती बने; तथा उसे चरितार्थ करने की शक्ति एवं क्षमता उन्हें प्राप्त हो यह प्रयास होता है।

सजगता की आवश्यकता : इन प्रयासों के पीछे, समाज व देश को चलाने की जिम्मेदारी हमारी भी है, क्योंकि यह देश व समाज मेरा अपना है, यह अपनेपन की प्रेरणा रहती है। आंदोलनों के पीछे भी यही प्रेरणा होनी चाहिए। परन्तु जब ऐसी स्थिति न होकर आंदोलन राजनीति का साधन बन जाता है, किसी व्यक्ति, समूह या विचार के प्रति विरोधी शत्रुभाव लेकर चलता है तब इसका लाभ भारत को दबाना चाहने वाली शक्तियां लेती हैं। मतभेदों को और गहरा बनाकर मनभेद उत्पन्न करना, समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में अन्यायग्रस्तता की (victimhood) भावना उत्पन्न करना आदि करते हुए देश में देश की व्यवस्थाओं के बारे में अश्रद्धा उत्पन्न करना, कलह, उग्र असंतोष, अलगाव, अव्यवस्था व अराजकता का वातावरण बनाना यह उनकी कार्यपद्धति है। भारत को दबाये रखना चाहने वाली विश्व की शक्तियां भी कभी कभी इसमें अपना खेल करती रहती हैं। श्रीमती आशा भोसले जी के गाए, श्री पी. सावळाराम रचित एक बहुत पुराने मराठी गीत की आखरी पंक्तियाँ याद आती है।

"वाढवीत भेदभावा दुष्टतेचा फिरतो कावा
गाठूनिया भोळ्या जीवा अंधारात घालिल घावा"

(भोले-भाले लोगों को पकड़ कर भेद भाव बढ़ाते हुए दुष्टता अंधेरे में से आघात कर रही है।)

इसलिए - "चित्त नित्य सावध ठेवा एक लक्ष्यि लावून डोळे"

(सावधान हों कर लक्ष्य पर केंद्रित हो जाएँ।)

स्पष्ट है कि ऐसी विभेदकारी प्रवृत्तियों के द्वारा निर्मित बुद्धिभेद

के चपेट से बचते हुए अपनी परस्पर सद्भावना की रक्षा करनी होगी। सावधान रह कर किसी प्रकार से उद्वेलित, उत्तेजित न होते हुए, भारत को विश्वगुरु पद पर देखने की अपनी आकांक्षा व लक्ष्य नित्य ध्यान में रखते हुए हमें प्रयासरत रहना होगा। आत्मीयता, अनुशासन तथा अपने राष्ट्रीय ध्येय के प्रति निष्ठा पर मजबूती से टिका समाज ही एकता को पाता है, तथा अपराजेय शक्ति को पाता है। संघ की यह प्रतीति है कि अपने समाज ने प्राचीन काल में अस्तित्व की एकता के सत्य को साक्षात किया, व इसी एकता की अनुभूति समय-समय पर विश्व को देने हेतु सभी का स्वीकार, सम्मान व प्रतिष्ठा करने वाले बहुरूप परन्तु एकरस जीवन को हमारा समाज जीता आया है।

एकता के सूत्रों पर दृढ़ रहें : हमारे समाज के इस जीवन ध्येय को हमने ध्यान में रखा तब हम सभी विजयी हुए। जब लहर्ड कर्जन ने बंगाल को हिंदू से मुसलमान को अलग करने के लिए विभाजित करना चाहा तब एक भूमि व एक समाज को सांप्रदायिक आधार पर बांटने का विरोध समाज से डट कर हुआ, ब्रिटिश सत्ता को अपना विभाजन का प्रस्ताव वापस लेना पड़ा। उसी एकता व देशभक्ति के प्रतीक के रूप मे उस समय 'वन्दे मातरम्' का उदय हुआ। विभाजन परास्त हो गया। ऐसा 1947 में क्यों नही हो पाया? क्यों कि हम विशिष्ट हैं इसलिए हम अलग थलग हैं, हम अलग दिखते हैं इसलिए अलग ही हैं यह विचार; हमें बांट कर लड़ाते रखना चाहने वालों ने हमारे मन में बिठा दिया। सांप्रदायिक कट्टरपंथी विचारधारा के प्रभाव से हमने भी यह मन बना लिया कि अलग दिखते हैं इसलिए वास्तव में भी हम एक नही, अलग ही है। अलगाव, राजनीतिक वर्चस्व की लालच तथा स्वार्थ सिद्धि के संयुक्त जुनून में हम, हमें एक बनाकर रखने वाले आधारों को क्रमशः नकारते चले गए। तुष्टीकरण की मानसिकता के कारण हमें तोड़ने वाली इस मानसिकता को हवा मिलती गई। देश विभाजन तक हो गया। लेकिन जिस शान्ति तथा अलग, स्वायत्त अस्तित्व के सुख की आशा दिखा कर यह दुष्टता का विभाजनकारी खेल किया गया, वह सुख-शान्ति तो मिली नहीं; उल्टे सीमा पर तथा देश में सदा के लिए अशांति, परस्पर अविश्वास, असुरक्षा व छोटे-छोटे कारणों से कलह हमने मोल लिया। बंग भंग के विभाजनकारी षडयंत्र को परास्त करने वाला वन्देमातरम आज भी वही एकता की प्रेरणा देने में सशक्त है। वह अपना राष्ट्रगीत है। उसे स्वाभिमान से, उच्च कंठ से तथा संपूर्ण गाने में कोई संकोच या विरोध नहीं होना चाहिए।

भारत की मातृभूमि के नाते भक्ति, हमारे समान भारतीय पूर्वजों के जीवन का गौरव व अनुकरण तथा हमारी सनातन भारतीय संस्कृति के वैश्विक मानवीय मूल्यों के अनुसार अपने जीवन को ढालना यह हम सबको सदा एक रखते आये हैं। सभी पंथ, प्रान्त, भाषा, जाति आदि विविधताओं के अविरोधी तथा उनके परे यह सारे आधार हैं। इनके नित्य परिशीलन से इनको समझना व मन से अपनाना हमारी एकता के साथ साथ हम प्रत्येक की विशिष्टता को भी पुष्ट करते रहेगा। अपनी छोटी पहचानों पर खतरे की आशंकाओं से अथवा उनके अहंकार में भ्रमित हो कर; हमारी एकता के इन आधारों को छोड़ कर, बार बार वहीं ठोकर खाने की ग़लती हमें नहीं करनी चाहिए।

अपने अपने छोटे अहंकार, अपने स्वयं की तथा अन्य लोगों की उपासनाओं के बारे में पाले हुए भ्रम तथा विविधताको अलगाव मानने की प्रवृत्ति को हमें त्यागना ही पड़ेगा। भारत भक्ति, पूर्वज गौरव तथा भारतीय संस्कृति के हम सभी को जोड़ने वाले इस त्रिसूत्र को मन से अपनाते हुए देश के लिए जीने की राह पर बढ़ना होगा।

भारत का वैश्विक दायित्व व हमारे कर्तव्य : जिन समस्याओं के कारण आज विश्व त्रस्त एवं आतंकित है, उनके मूल में जीवन के दृष्टिकोण का अधूरापन है, वरना पुरुषार्थ के मामले में हम भी शेष विश्व से बहुत कुछ सीख सकते हैं। उन बातों को सीखने के साथ साथ अपनी राष्ट्रीयता का स्पष्ट स्वरूप समझते हुए उसको अंगीकार कर, अपनी एकता व गुणवत्ता को संजोकर, हम संगठित पुरुषार्थ में जुट जाए यह आवश्यक है। धर्म तत्व से विकास के पथ को सर्वांगपरिपूर्ण बना कर दुनिया को सुख और शांति की नई राह दे सकने वाला भारत खड़ा करना है। हमें अपने राष्ट्रीय मूल्यों के आधार पर सम्पूर्ण विश्व को एक नया विकास पथ अपने उदाहरण से देना है। हम जीवन में जो भी करेंगे, वह गुणवत्ता में उत्कृष्ट ही होगा, समाज व देश की सुरक्षा, एकात्मता, सामाजिक न्याय एवं प्रगति - प्रतिष्ठा के लिए उचित ही होगा यह सजगता रखनी होगी। भारत का परमवैभव तथा विश्वगुरुत्व हममे से प्रत्येक के पुरुषार्थ से सिद्ध होनेवाला है। दूसरा कोई भी पर्याय अथवा छोटा रास्ता (shortcut) उपलब्ध नहीं है। अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक जीवनव्यवहार में नित्य छोटी-छोटी सत्कृतियों के द्वारा परिवर्तन लाते हुए सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी अपने कर्तव्य का पालन कर सकता है। पंच परिवर्तन की पहलें व स्वयंसेवकों द्वारा चलायी गयी गतिविधियां इसी पद्धति से व्यक्ति को देशसेवा व भक्ति की राह पर कदम कदम बढ़ाती है।

अपने कार्य के शतवार्षिकी के कार्यक्रमों को व लक्ष्यों को पूर्ण करने के पश्चात समाज की यह संगठित पुरुषार्थी विजयशालिनी शक्ति खड़ी करने की ओर संघ बढ़ेगा।

"साध्य करना है हमे केशव प्रदर्शित ध्येय सपना।
बस उसी की पूर्ति के हित हो समर्पित जन्म अपना।।
तुष्ट माँ होगी तभी तो विश्व में सम्मान पा कर।
बढ़ रहे हैं चरण अगणित बस इसी धुन में निरंतर।।
ध्येय के पथ पर निरंतर"।। ।। भारत माता की जय।।

नागपुर में श्री विजयादशमी उत्सव 2026 के अवसर पर दैनिक जागरण के प्रधान संपादक संजय गुप्ता जी द्वारा दिया गया उद्‌बोधन।

आप सभी को विजयादशमी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थापना दिवस पर बधाई। मैं कृतज्ञ हूं कि आपने मुझे इस महान पर्व पर आमंत्रित किया और यह मेरे लिए बहुत ही गर्व की बात है। संघ के 101वें स्थापना दिवस पर यह आयोजन एक अलग महत्व रखता है। 101 वर्ष पूर्व जब संघ की स्थापना हुई थी, तब भारत स्वतंत्र नहीं था और उस समय की सामाजिक स्थितियां भी बहुत अलग थीं। लिहाजा संघ स्थापना की मूल अवधारणा और उद्देश्य जहां हिन्दू समाज की एकता एवं उसे सामर्थ्यवान बनाना था, वहीं राष्ट्र को स्वतंत्रता दिलाना भी उसका प्रमुख उद्देश्य था। संघ की तत्कालीन धारणा थी कि समाज को पराधीनता की मानसिकता से उबार कर स्व-बोध के बिना वास्तविक स्वतंत्रता की कल्पना नहीं की जा सकती।

भारत स्वतंत्र हुआ और स्वतंत्रता के बाद संघ ने व्यक्ति निर्माण के साथ-साथ भारतीयता और राष्ट्र निष्ठा को अपना प्रमुख लक्ष्य बनाया। संघ की इस पवित्र विचारधारा को, आजादी के बाद सत्ता प्रतिष्ठान में विराजमान राजनीतिकों और राजनीति के एक वर्ग ने स्वीकार नहीं किया, क्योंकि संघ की विचारधारा उनके तुष्टीकरण के एजेंडे से मेल नहीं खाती थी, फिर भी तमाम चुनौतियों के बावजूद संघ अपने मार्ग पर निरंतर बढ़ता रहा। भारत के गणतंत्र होते ही संघ के कार्यों-विचारों से प्रेरित होकर विशुद्ध भारतीयता में विश्वास रखने वाले अनेक राजनीतिकों ने अपने विचारों को बदला और कुछ राष्ट्र निष्ठ विचारकों के साथ मिलकर जनसंघ की स्थापना की। बाद में यही जनसंघ, भारतीय जनता पार्टी के रूप में आज विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन गई है। आज इस पार्टी के शीर्ष पर बैठे हुए नेताओं के साथ-साथ अनेक नेताओं के अंदर भारतीयता, राष्ट्रीयता और भारतीय संस्कारों का जो बोध है, वह उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से ही मिला है। लिहाजा यह मानने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि इस पार्टी की सफलता के पीछे संघ की ही दृढ़ वैचारिकता और उसकी संगठन शक्ति है।

संघ के साथ-साथ उसके आनुषांगिक और विचारों से प्रेरित संगठन, जिसमें भारतीय जनता पार्टी शामिल है, पर लगातार आरोप लगते हैं कि वह हिन्दू अतिवाद को बढ़ावा देता है। पर, आज यदि संघ नहीं होता तो हिन्दू संस्कार, हिन्दू जीवन पद्धति न जाने कब के विलुप्त हो गए होते। पहले मुगलों का और फिर अंग्रेजों का शासन। लगभग छह सौ वर्षों की गुलामी के बाद अगर आज



भारतीयता और हिन्दुत्व की विश्व में अपनी धमक है तो इसका श्रेय प्रमुख रूप से संघ को दिया जाना चाहिए।

शताब्दी वर्ष के उपरांत संघ अगले 100 वर्ष के लिए समाज में निरंतर बदलाव लाने और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना के उद्देश्यों पर कार्य कर रहा है क्योंकि चुनौतियां अभी बहुत हैं। सामाजिक कुरीतियां जो समय के साथ घर करने लगती हैं, उन्हें दूर करने के लिए संघ जैसी संस्थाओं की हमेशा आवश्यकता पड़ती है क्योंकि संघ निष्काम भाव से अपना कार्य करता है। वैसे तो सामाजिक सुधार की जिम्मेदारी राजनीतिक पार्टियों पर भी है, पर वोट की राजनीति के चलते राजनीतिक महत्वाकांक्षा एक अलग तरह की सामाजिक बीमारी को जन्म दे देती है। ऐसे में कुछ राजनीतिक नेताओं को छोड़ दें तो अधिकांश पर जनता को कम से कम अपने स्वयं विकास के मामले में उन पर भरोसा नहीं होता। ऐसे में संघ और संघ प्रेरित संगठनों की आवश्यकता और सामयिकता अधिक बढ़ जाती है।



आज भारत में तेज आर्थिक प्रगति हो रही है और सब कुछ ठीक चला, तो आने वाले 20-25 वर्षों में हम वास्तव में एक समृद्ध राष्ट्र के रूप में सामने आएंगे। पर, क्या यह समृद्धि हमारी चेतना-अवचेतना को भी समृद्ध करेगी? इस पर संशय है क्योंकि आज का समाज जाति-पाति, वर्गभेद और पंथ-मजहब के पालों में बंटा हुआ है, जिसके कारण सहिष्णुता का अत्यधिक अभाव दिखता है। राष्ट्र के प्रति निष्ठा तो है, पर अभी भी बड़ी संख्या में नागरिकों में उस नैतिकता, कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व के बोध का अभाव है, जिससे कि राष्ट्र एवं समाज को और अधिक श्रेष्ठ बनाने के लिए जो विधि-विधान हैं, वह उनको मानें और उनका पालन करें। आज के समाज में जो एक और कमी दिख रही है, वह है अनुशासित नहीं होने की। अधिकांश नागरिक इस सोच में रहते हैं कि यह तंत्र व्यवस्था देश मुझे क्या दे रहा है, जबकि उसकी सोच होनी चाहिए कि... देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें। राष्ट्र के लिए एक नागरिक के क्या-क्या कर्तव्य हैं, ऐसी सोच का बहुधा अभाव दिखता है। इन सब चुनौतियों को संघ ने बहुत बेहतर तरीके से समझा है और लगातार इस पर कार्य कर रहा है।

दैनिक जागरण अखबार की भी संपादकीय नीति में यही है। हमारे समाचार पत्र की नीति कहती है कि 'दैनिक जागरण एक आस्तिक, आस्थावान, राष्ट्रभक्त और सनातन भारतीय मूल्यों का संवाहक समाचार पत्र है। जिसके संस्कार ही सनातन भारतीय हैं। ऐसा समाचार पत्र, जिसकी नियति और प्रकृति में पूर्ण आस्था है। जो सकारात्मक सोच के साथ समरसता व सद्भावना का आचरण अपनाते हुए, अपने पाठकों को भी इसके लिए निरंतर प्रेरित करता है। जिसका लक्ष्य देशवासियों में, इस भावना को जागृत करना भी है कि वो देश के लिए क्या कर सकते हैं, देश को क्या दे सकते हैं?'

देखा जाए तो संघ और जागरण की विचारधारा, भारतीय सनातन संस्कृति एवं राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं समर्पण के बिंदु पर एक ही है। एक विशाल और उत्तरदायी समाचार-विचार समूह होने के नाते दैनिक जागरण, अपनी यह नैतिक जिम्मेदारी समझता है कि नागरिकों को उनके कर्तव्य के प्रति लगातार सजग करता रहे। जागरण अपने सात सरोकारों के माध्यम से सामाजिक-राष्ट्रीय उत्थान की दिशा में निरंतर प्रयासरत है। जागरण के यह सरोकार हैं, सुशिक्षित समाज, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, स्वस्थ समाज, नारी सशक्तिकरण, गरीबी उन्मूलन तथा जनसंख्या नियोजन।



आज भी देश में कतिपय राजनीतिक दल और अनेक सामाजिक संगठन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के महत्व को समझने के लिए तैयार नहीं हैं। भारत की स्वतंत्रता के उपरांत देश में कोई भी ऐसा संगठन नहीं था, जो सनातन भारतीय मूल्यों का प्रचार-प्रसार करता और जनमानस में उन मूल्यों के महत्व को समझाता। किसी भी राष्ट्र के लोगों के संस्कार और मूल्य ही उसको परिभाषित करते हैं। आज अगर भारत का अंतरराष्ट्रीय पटल पर कोई महत्व स्वतंत्रता के बाद है तो उसकी अपनी आर्थिक क्षमता का एक बड़ा योगदान तो है ही, पर यदि इस आयाम को एक बार अलग भी कर दें तो इस भूभाग के संस्कारों का भी आज के युग में अपना एक महत्व है, जैसा कि हजारों वर्ष पूर्व था। आज भारतीय सांस्कृतिक भूभाग में अनेक पंथ, जीवन पद्धतियां प्रचलित हैं। निश्चित रूप से इस बात के पूरे प्रमाण हैं कि यह सारे पंथ, पद्धतियां हिन्दू मूल से ही निकलीं। उस समय तात्कालिक रूप से हिन्दू जीवन शैली में जो विसंगतियां उत्पन्न हुईं, प्रचलित हुईं, अनेक पंथ, उन विसंगतियों के कारण ही पनपे। इसे स्वतंत्र भारत के नजरिये से देखें, तो अगर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ या उसके मूल्यों से प्रेरित संगठन ना हों तो वह दिन दूर नहीं जब वर्तमान स्वरूप की हिन्दू जीवन पद्धति जाति-पाति के आधार पर संविधान में अलग से परिभाषित हो जाए और एक बार फिर हिन्दू समाज बंट जाए।

पिछली सदी में जहां संघ का ध्यान तुष्टीकरण के कारण हिन्दू समाज के सामने उत्पन्न तमाम चुनौतियों को दूर करना था, वहीं अगली शताब्दी के लिए जो चुनौतियां संघ ने ली हैं, उसमें देशवासियों में चरित्र निर्माण सर्वोपरि है। अच्छे चरित्र का व्यक्ति राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को भली भांति समझता है। राष्ट्र के प्रति निष्ठा और कर्तव्य एक चरित्रवान नागरिक के जरुरी पहलू हैं। आज अगर भारत को उस स्वर्णिम काल को वापस लाना है तो बिना चरित्र निर्माण के यह संभव नहीं है।

अन्याय पर न्याय और असत्य पर सत्य की विजय के इस पर्व पर संघ नेतृत्व ने आज मुझे जो अवसर दिया, उसके लिए हम एक बार पुनः कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं। हम अपने पूरे जागरण समूह की ओर से सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करते हैं कि वह भारत को परम वैभव के शिखर पर ले जाने के लिए सतत प्रयासरत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को और सामर्थ्यवान बनाए।

पंजाब में धर्मांतरण और बदलती जनसांख्यिकी



सतीश शर्मा
केशव भाग संघचालक
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, नोएडा

पंजाब में धर्मांतरण का मुद्दा सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक चर्चाओं के केंद्र में रहा है। पंजाब, जो ऐतिहासिक रूप से सिख बहुल राज्य रहा है, वहां हाल के वर्षों में खासकर ग्रामीण इलाकों में ईसाई धर्म अपनाने के मामलों में तेजी देखी गई है। इस बदलाव ने राज्य के भीतर एक नई बहस को जन्म दिया है, जिसे लेकर विभिन्न धार्मिक और सामाजिक संगठनों द्वारा कई तरह के दावे और चिंताएं व्यक्त की जा रही हैं। पिछले 15 साल की प्रवृत्तियां बताती हैं कि पंजाब एक बहुसांस्कृतिक और मिश्रित जनसांख्यिकी की ओर बढ़ रहा है, 2011 की आधिकारिक जनगणना के अनुसार, पंजाब में ईसाई आबादी मात्र 1.26 प्रतिशत (लगभग 3. 48 लाख) थी। हालांकि, पिछले एक दशक और विशेषकर पिछले 5-7 वर्षों में जमीनी स्तर पर बड़े बदलाव के दावे किए जा रहे हैं। पंजाब बोर्ड ऑफ एनिमेटर्स (PBA) जैसे संगठनों और हाल ही में सितंबर 2026 में राज्यसभा सांसद विक्रमजीत सिंह साहनी के बयानों में दावा किया गया है कि पंजाब में ईसाई आबादी बढ़कर लगभग 15 प्रतिशत (25 से 30 लाख) तक पहुंच चुकी है। कई रिपोर्ट्स से पता चलता है कि बड़ी संख्या में लोग औपचारिक रूप से कानूनी रूप से धर्म परिवर्तन न करके भी नियमित रूप से चर्च जा रहे हैं। वे अपनी पारंपरिक वेशभूषा और नाम बनाए रखते हैं ताकि उनके सामाजिक और कानूनी अधिकारों पर असर न पड़े।

पंजाब में ईसाई धर्म (विशेष रूप से नए पेंटाकोस्टल चर्च) के प्रति बढ़ते झुकाव के पीछे कई सामाजिक और आर्थिक कारण माने जा रहे हैं, पंजाब की आबादी में लगभग 31 प्रतिशत से अधिक हिस्सेदारी दलित समुदाय की है। हालांकि सिख धर्म सैद्धांतिक रूप से समानता की वकालत करता है, लेकिन भ्रम फैला कर बराबरी और सम्मान का वादा इन समुदायों को नए चर्चों की ओर आकर्षित करता है। नए पेंटाकोस्टल पादरियों द्वारा आयोजित 'चंगाई सभाओं' में बीमारियों से मुक्ति, पारिवारिक कलह से राहत और अंधविश्वास पर आधारित कथित चमत्कारों का सहारा लिया जाता है, जो गरीब और स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित आबादी को तेजी से प्रभावित करता है। नए चर्चों ने पंजाब की स्थानीय संस्कृति को अपनाया है। यहां प्रार्थनाएं और गीत सिख धर्म के भजनों (कीर्तन) की शैली में गाए जाते हैं और लोग जमीन पर बैठते हैं। इससे नए धर्म में जाने वाले लोगों को कोई सांस्कृतिक परायापन महसूस नहीं होता। कई गरीब परिवारों को शिक्षा, स्वास्थ्य और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए आर्थिक मदद का भरोसा दिया जाता है। पंजाब के युवाओं में विदेश (कनाडा/यूरोप) जाने की तीव्र इच्छा का भी पादरी फायदा उठाते हैं।

धर्मांतरण का सबसे अधिक प्रभाव माझा और दोआबा क्षेत्रों के ग्रामीण इलाकों में देखा गया है, विशेषकर गुरदासपुर, अमृतसर, तरनतारन और जालंधर जिलों में। जालंधर का खाम्बरा गाँव इसका एक बड़ा केंद्र बनकर उभरा है, जहाँ एशिया का एक बहुत बड़ा चर्च कॉम्प्लेक्स विकसित हो रहा है। ग्रामीण इलाकों में कृषि भूमि का उपयोग अस्थायी प्रार्थना केंद्रों (जिन्हें स्थानीय स्तर पर डेरा या घरेलू चर्च कहा जाता है) के निर्माण के लिए धड़ल्ले से हो रहा है। इस उभार के कारण पंजाब के पारंपरिक ताने-बाने में बेचैनी और तनाव भी देखा गया है।

अकाल तख्त के जत्थेदारों और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इस पर कड़ी चिंता जताई है और इसे सिख धर्म के अस्तित्व पर संकट बताते हुए ग्रामीण इलाकों में 'घर-घर धर्म प्रचार' आंदोलन शुरू किया है ताकि लोगों को अपने मूल धर्म से जोड़े रखा जा सके। कई हिंदू और सिख संगठनों द्वारा पंजाब में भी देश के अन्य 12 राज्यों की तरह सख्त धर्मांतरण विरोधी कानून बनाने की मांग जोर-शोर से उठाई जा रही है। मार्च 2026 में सुप्रीम कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसला देते हुए स्पष्ट किया कि यदि कोई व्यक्ति हिंदू, सिख या बौद्ध धर्म को छोड़कर कोई अन्य धर्म (जैसे ईसाई या इस्लाम) अपनाता है, तो उसका अनुसूचित जाति (SC) का दर्जा और उससे मिलने वाले आरक्षण के लाभ खत्म हो जाएंगे। इस फैसले का पंजाब के इस पूरे परिदृश्य पर गहरा असर पड़ने की संभावना है। पंजाब में धर्म

परिवर्तन केवल एक धार्मिक आस्था का विषय नहीं रहा, बल्कि यह राज्य की गहरी सामाजिक असमानता, स्वास्थ्य व शिक्षा के अभाव और सांस्कृतिक पहचान की असुरक्षा से जुड़ा हुआ एक जटिल मुद्दा बन चुका है। जहां एक ओर इसे धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार के रूप में देखा जाता है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक ताने-बाने में बदलाव और कथित प्रलोभनों को लेकर राज्य में तनाव और कानूनी नियंत्रण की मांग भी लगातार बढ़ रही है।



इस कारण से पंजाब में जनसांख्यिकी में महत्वपूर्ण और बड़े बदलाव देखे गए हैं। यह बदलाव मुख्य रूप से तीन बड़े कारणों से हो रहा है बड़े पैमाने पर युवाओं का विदेश जाना, अन्य राज्यों से प्रवासी श्रमिकों का आना और गिरती जन्म दर। पंजाब की जनसांख्यिकी में आए प्रमुख परिवर्तन में जनसंख्या वृद्धि दर में भारी गिरावट और बुजुर्गों की बढ़ती संख्या। पंजाब की जन्म दर वर्ष 2012-14 के 15.7 से घटकर 2022-24 में 13.9 पर आ गई है, जो राष्ट्रीय औसत (18.6) से काफी कम है। राज्य की कुल प्रजनन दर घटकर लगभग 1.6 रह गई है, जो जनसंख्या को स्थिर रखने के लिए जरूरी रिप्लेसमेंट लेवल (2.1) से बहुत कम है। जन्म दर में कमी और युवाओं के पलायन के कारण पंजाब में युवाओं की आबादी कम हो रही है और बुजुर्गों (60 वर्ष से अधिक) की संख्या तेजी से बढ़ रही है। पंजाब इस समय दो तरफा माइग्रेशन का सामना कर रहा है, अनुमानों के अनुसार, पंजाब से हर साल लगभग 1.5 लाख से 2 लाख युवा पढ़ाई और काम के सिलसिले में कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और अन्य देशों में चले जाते हैं, और उनमें से अधिकांश वहीं बस जाते हैं।

स्थानीय युवाओं के विदेश जाने के कारण खेती, उद्योगों और अन्य दैनिक कार्यों में लेबर की कमी हुई है। इसे पूरा करने के लिए उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों से बड़ी संख्या में प्रवासी श्रमिक पंजाब आ रहे हैं। वर्तमान में पंजाब में प्रवासी श्रमिकों की संख्या लगभग 33 लाख से अधिक अनुमानित है। कम प्रजनन दर और सबसे ज्यादा विदेश पलायन के कारण स्थानीय सिख आबादी के प्रतिशत में गिरावट का अनुमान है।

पंजाब के ग्रामीण इलाकों और सीमावर्ती जिलों (जैसे तरनतारन, अमृतसर, गुरदासपुर) में ईसाई धर्म अपनाने या धर्मांतरण की प्रवृत्तियों में तेजी आई है। विभिन्न मीडिया रिपोर्ट्स और ग्राउंड सर्वे के अनुसार, ईसाई समुदाय की संख्या जमीनी स्तर पर पहले से काफी बढ़ी है। पिछले 15 वर्षों में पंजाब में गिरजाघरों (चर्चों) की संख्या में अभूतपूर्व और अत्यधिक तीव्र वृद्धि दर्ज की गई है। आधिकारिक तौर पर पंजाब में मुख्यधारा और पंजीकृत चर्चों की संख्या डेटा विश्लेषण के अनुसार 948 के करीब है, लेकिन अगर गांवों में खुले छोटे स्वतंत्र प्रार्थना हॉल और 'घरेलू चर्चों' को मिला दिया जाए, तो यह संख्या हजारों में पहुंच जाती है। यूनाइटेड क्रिश्चियन फ्रंट और स्वतंत्र ग्राउंड अध्ययनों के आंकड़ों के अनुसार, पंजाब के कुल लगभग 12,000 गांवों में से 8,000 से अधिक गांवों में ईसाई धार्मिक समितियां या प्रार्थना केंद्र सक्रिय हो चुके हैं।

अमृतसर और गुरदासपुर जैसे सीमावर्ती जिलों के कई इलाकों में पाया गया है कि वहां मौजूद चर्चों में से 60 प्रतिशत से 70 प्रतिशत चर्च पिछले कुछ वर्षों में ही बनकर तैयार हुए हैं। पहले जहां केवल बड़े शहरों में पारंपरिक ऐतिहासिक चर्च (जैसे रोमन कैथोलिक या प्रोटेस्टेंट) होते थे, अब ग्रामीण पंजाब के लगभग हर दूसरे गांव में छोटे-छोटे गिरजाघर या प्रार्थना घर (पेंटेकोस्टल चर्च) खुल गए हैं। चर्चों की संख्या के साथ-साथ राज्य में स्वतंत्र पादरियों और प्रचारकों की संख्या भी तेजी से बढ़ी है। विभिन्न मीडिया इन्वेस्टिगेशन रिपोर्ट्स (जैसे इंडिया टुडे) के मुताबिक, इस समय पंजाब में सक्रिय पादरियों और मिशनरियों की संख्या 65,000 से अधिक होने का अनुमान लगाया गया है। इनमें से कई पादरी स्थानीय पृष्ठभूमि से ही आते हैं जो धर्म परिवर्तन के बाद इस कार्य से जुड़े हैं।

पिछले 15 सालों की सबसे बड़ी विशेषता बड़े 'मेगा चर्चों' का निर्माण है। जालंधर के खाम्बरा गांव में पादरी अंकुर नरूला द्वारा संचालित चर्च का दायरा पिछले 15 सालों में एक छोटे से कमरे से बढ़कर 65 एकड़ के विशाल परिसर में बदल चुका है। इसे एशिया के सबसे बड़े चर्च परिसरों में से एक माना जा रहा है, जहां हर हफ्ते लाखों की संख्या में अनुयायी जुटते हैं। पंजाब में पिछले एक दशक में 'हाउस चर्च' या 'घरेलू चर्च' की संख्या सबसे तेजी से बढ़ी है। बहुत से लोग जो कागजी तौर पर अपनी पहचान नहीं बदलते, वे अपने घरों की छतों या कमरों में साप्ताहिक प्रार्थना सभाएं आयोजित करते हैं। ये अनौपचारिक चर्च सरकारी या आधिकारिक आंकड़ों में दर्ज नहीं होते, लेकिन जमीनी स्तर पर इनकी संख्या बेहद ज्यादा है। इसलिए जहाँ स्थानीय आबादी सिकुड़ रही है व पंजाब में स्थानीय सांस्कृतिक, सामाजिक व धार्मिक पहचान का खतरा बना हुआ है।

एशियन गेम्स 2026 : भारतीय खेलों का नया सूर्योदय



उमानाथ त्रिपाठी
स्वतंत्र लेखक, समीक्षक एवं रचनाकार

एशियाई खेल केवल पदकों की प्रतिस्पर्धा नहीं, बल्कि एशिया की खेल प्रतिभा, सामर्थ्य और राष्ट्रीय गौरव का विराट मंच हैं। जापान के आइची-नागोया में आयोजित 20वें एशियाई खेलों में भारतीय एथलीटों ने अपने अदम्य साहस और उत्कृष्ट प्रदर्शन से कई ऐतिहासिक और यादगार अध्याय जोड़े।

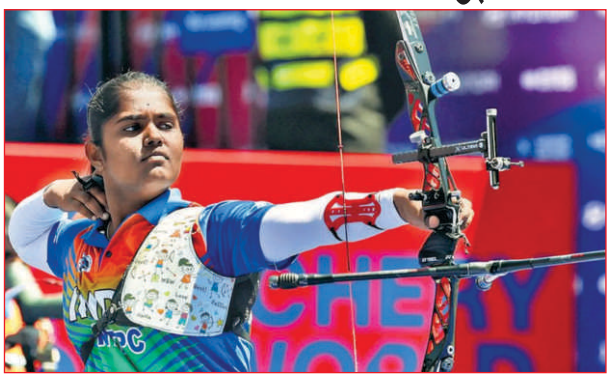
भारत ने इस महाकुंभ का समापन 21 स्वर्ण, 27 रजत और 37 कांस्य सहित कुल 85 पदकों के साथ किया और पदक तालिका में चौथा स्थान (चीन, जापान और दक्षिण कोरिया के बाद) बरकरार रखा।

हांगझोउ का रिकॉर्ड और बढ़ती साख : यद्यपि भारत हांगझोउ (2023) के अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन (106 पदक - ***28*** स्वर्ण, ***38*** रजत, ***40*** कांस्य) का रिकॉर्ड नहीं तोड़ सका, लेकिन ***85*** पदकों के साथ यह एशियाई खेलों के इतिहास में भारत का दूसरा सबसे सफल प्रदर्शन रहा।

इस बार की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि भारत ने बहु-खेल स्पर्धाओं में अपनी विविधता और पैठ को और मजबूत किया। एथलेटिक्स ने पारंपरिक रूप से सर्वाधिक पदक दिलाए, वहीं निशानेबाजी, तीरंदाजी, मुक्केबाजी और कुश्ती में भारतीय खिलाड़ियों ने अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। इसके अलावा क्रिकेट, कबड्डी और हॉकी जैसी टीम स्पर्धाओं में भारत का दबदबा कायम रहा।

नारी शक्ति का स्वर्णिम परचम : भारतीय महिला एथलीटों का प्रदर्शन इस एशियन गेम्स का मुख्य आकर्षण रहा। उन्होंने न केवल पदक जीते, बल्कि अपनी स्वर्णिम सफलता से आने वाली पीढ़ियों के लिए नए मानदंड स्थापित किए।

कुमकुम अनिल मोहोड - तीरंदाजी की नई सनसनी महाराष्ट्र की ***17*** वर्षीया कुमकुम अनिल मोहोड ने अपने पदार्पण एशियन गेम्स में ही इतिहास रच दिया। उन्होंने महिला रिकर्व टीम स्पर्धा के साथ-साथ व्यक्तिगत रिकर्व स्पर्धा में भी स्वर्ण पदक जीता।



बेहद रोमांचक फाइनल मुकाबले में उन्होंने दक्षिण कोरिया की ओ ये-जिन को 'शूट-ऑफ' में हराकर भारत को एशियन गेम्स की व्यक्तिगत रिकर्व स्पर्धा का पहला महिला स्वर्ण दिलाया।

इस ऐतिहासिक जीत के साथ ही उन्होंने ***2028*** लॉस एंजिल्स ओलंपिक का कोटा भी हासिल कर लिया। कुल ***3*** पदक जीतकर कुमकुम सीमित संसाधनों और दृढ़ संकल्प की जीवंत मिसाल बन चुकी हैं।

लवलीना बोरगोहेन : मुक्के में सोने की चमक : असम की



29 वर्षीया मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन ने ***75*** किग्रा वर्ग के फाइनल में चीन की बाओ जयी को ***5-0*** से मात देकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। टोक्यो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता लवलीना ने पिछले एशियाई खेलों के रजत को इस बार स्वर्ण में बदला।

वे मैरी कॉम के बाद एशियाई खेलों में मुक्केबाजी का स्वर्ण जीतने वाली दूसरी भारतीय महिला बनीं। अपने जन्मदिन के दिन देश को यह तोहफा देना इस जीत को और भी खास बना गया।

मैदान पर पुरुषों का दमदार दबदबा : उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ से आने वाले गुलवीर सिंह एथलेटिक्स में भारतीय दल के सबसे बड़े सितारे बनकर उभरे। उन्होंने एक ही एशियाई खेलों में तीन पदक (***10,000*** मी और ***1500*** मी में रजत तथा ***5000*** मी में कांस्य) जीतकर यह साबित कर दिया कि भारतीय एथलीट अब लंबी



दूरी की स्पर्धाओं में भी विश्व स्तरीय चुनौती देने के लिए तैयार हैं।

कायनन डेरियस चेनाई : निशाने पर सटीक वार :



निशानेबाजी में कायनन डेरियस चेनाई ने नीरू धांडा के साथ मिलकर मिश्रित ट्रैप टीम स्पर्धा में एशियाई रिकॉर्ड बनाते हुए भारत की झोली में स्वर्ण पदक डाला। राष्ट्रीय स्तर के शूटर रहे अपने पिता डेरियस चेनाई के नक्शेकदम पर चलते हुए कायनन ने भारत की निशानेबाजी परंपरा को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया।

टीम स्पर्धाओं में भारत की बादशाहत व्यक्तिगत स्पर्धाओं के साथ-साथ टीम खेलों में भी भारत का तिरंगा सबसे ऊपर लहराया।



क्रिकेट पुरुष (बनाम पाकिस्तान) और महिला (बनाम श्रीलंका) दोनों टीमों ने अपने-अपने खिताब बरकरार रखते हुए स्वर्ण पदक जीते।





कबड्डी भारतीय पुरुष और महिला दोनों टीमों ने अपने पारंपरिक दबदबे को कायम रखते हुए दोहरे स्वर्ण पर कब्जा जमाया।



हॉकी पुरुष टीम ने अपने स्वर्णिम सफर को जारी रखा, वहीं महिला हॉकी टीम ने लंबे समय बाद एशियाई खेलों का खिताब जीतकर नया इतिहास रचा।

केवल पदक नहीं, बदलती खेल संस्कृति : आइची-नागोया ***2026*** का सबसे बड़ा संदेश यह है कि भारतीय खेल जगत अब केवल भागीदारी तक सीमित नहीं है। नया भारत अब जीतने के इरादे के साथ मैदान में उतरता है। हमारे खिलाड़ी बिना किसी दबाव के अब पूरे जोश और उत्साह के साथ प्रतिस्पर्धा में शामिल होते हैं। जीतने का जज्बा उनके दिल में होता है और यही आत्मविश्वास उन्हें सफलता की सीढ़ियों पर आगे बढ़ाता है। हर जीत उत्साह देती है और हर विफलता भविष्य की बेहतर तैयारी का आधार बनती है।

85 पदकों का यह जश्न केवल एक पड़ाव है, मंजिल अभी और आगे है।

"पदक केवल धातु का टुकड़ा नहीं होता, वह वर्षों की तपस्या, अनुशासन और राष्ट्र के प्रति समर्पण का प्रतीक होता है।"

एशियन गेम्स 2026 के सभी पदक विजेताओं तथा देश का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रत्येक खिलाड़ी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। इन खिलाड़ियों की मेहनत, संघर्ष और आत्मविश्वास आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा।

जय हिंद!

हिंद दी चादर



बालेश्वर गुप्ता
लेखक

एक कोलाहल से सामने तप में लीन संत की आँखें खुल गयी। सामने चालीस पचास व्यक्तियों के सिर संत के चरणों में झुक गए। आशीर्वाद की मुद्रा में संत ने सबकी ओर स्नेह भरी नजरों से दृष्टिपात किया। क्षण भर में ही उन्होंने सबके चेहरों पर उनकी असीम वेदना को पढ़ लिया था। पूरा समूह चीत्कार सा उठा गुरु देव आप ही हमें बचा सकते हों, हमें बचा लो गुरु देव।

दस्सो पुत्तरो थानू की दुख तकलीफ ए,
मैं तहाड़े सारेया की कर सकदा हा।



गुरु देव हमारे धर्म को बचा लो। औरंगजेब के गर्वनर ने हमें अल्टीमेटम दे दिया है कि इस्लाम स्वीकार कर लो नहीं तो सब मारे जायेंगे। उसके अत्याचार हम पर बढ़ते ही जा रहे हैं। गुरु जी ने एक दृष्टि आगंतुकों पर डाली और एक गहरी साँस लेकर बोले पुत्तरो घबराओ नहीं, डरो नहीं, जाओ उस गवर्नर से कह दो हम सब इस्लाम स्वीकार करने को तैयार हैं, बस तुम तेगबहादुर से इस्लाम कबूल करा लो।

चारों ओर निस्तब्धता छा गई, अवाक हो वह समूह गुरु तेग बहादुर की ओर निहार रहा था, तो पास में ही खड़ा बालक गोविंद फक्र से गर्दन उठा मुस्कुरा रहा था, मानो कह रहा हो, बापू ये हुई ना बात। उक्त घटना 1675 में औरंगजेब के शासन काल की है। इस्लाम के नाम पर पूरे हिंदुस्तान में औरंगजेब का दमन चक्र अपने चरम पर था, उसे सनक थी, पूरे हिंदुस्तान में इस्लाम ही इस्लाम हो। कश्मीरी पंडित भी इससे अछूते नहीं रहे। औरंगजेब के गर्वनर ने सबको इस्लाम स्वीकार करने का फरमान जारी कर दिया था। कोई चारा न देख वे इकठ्ठा होकर गुरु तेग बहादुर जी की शरण आए थे।

कितनी विडम्बना है 1675 में इन कश्मीरी पंडितो को इस्लाम की चोट से बचाने को गुरु तेग बहादुर मिल गए थे, पर आजाद भारत में अपनी सरकार होने पर भी 1989 में इन अभागे कश्मीरी पंडितों को कोई तेग बहादुर नहीं मिला था,19 जनवरी 1989 को मस्जिदों से ऐलान कर दिया गया था, इस्लाम स्वीकार करो या अपनी जवान बहू बेटियों को यही छोड़कर भाग जाओ। कोई तेग बहादुर नहीं आया एक रात में ही कई लाख कश्मीरी हिंदुओं को अपनी जन्म भूमि छोड़ रातों रात भागना पड़ा था।

गुरु तेगबहादुर जी को दिल्ली दरबार में पेश कर दिया गया। उन्हे इस्लाम कबूल करने का फरमान औरंगजेब के दरबार में सुना दिया गया। निर्भीक गुरु के सामने मौत थी तो आँखों के आगे कश्मीरी पंडितों के मासूम चेहरे तथा हिंदुस्तान का भविष्य। गुरु जी ने सीना तान बोल दिया, शीश कटा सकता हूं धर्म नहीं बदल सकता। पूरा दरबार सन्नाटे में आ गया था। ऐसा दुस्साहस जिल्लेइलाही के सामने तो कोई कर ही नहीं सका था, फिर इस फकीर की इतनी हिम्मत।

तेग बहादुर को चांदनी चौक पर हाथ बांध कर जकड़ दिया गया। उन्हीं के सामने उनके साथ आए तीन प्रिय शिष्य में से एक भाई मति दास को आरे से चीर दिया गया, गुरु तेग बहादुर का दिल चीत्कार उठा, पर निश्चय से डिगे नहीं। दूसरे शिष्य भाई सती दास को तेल से भीगे कम्बल में लपेट कर जिंदा जला दिया, अडिग गुरु तेग बहादुर मानो पत्थर की शिला बन गए थे, कोई प्रतिक्रिया न देख जालिमों द्वारा तीसरे शिष्य भाई दयाला दास को खौलते पानी में डाल कर जिंदे को ही उबाल दिया। गुरु तेग बहादुर की आंखों का पानी भी सूख गया था। वे

> गुरु तेगबहादुर जी को दिल्ली दरबार में पेश कर दिया गया। उन्हे इस्लाम कबूल करने का फरमान औरंगजेब के दरबार में सुना दिया गया। निर्भीक गुरु के सामने मौत थी तो आँखों के आगे कश्मीरी पंडितों के मासूम चेहरे तथा हिंदुस्तान का भविष्य। गुरु जी ने सीना तान बोल दिया, शीश कटा सकता हूं पर धर्म नहीं बदल सकता। पूरा दरबार सन्नाटे में आ गया था। ऐसा दुस्साहस जिल्लेइलाही के सामने तो कोई कर ही नहीं सका था

अट्टहास कर उठे। अरे जालिमों ये तुम्हारी कायरता है, मेरी अब भी चुनौती है, मेरा धर्म परिवर्तन कराके दिखाओ तो?

वाक्य पूरा हुआ भी नहीं था कि तलवार से गुरु तेगबहादुर का शीश धड़ से अलग कर दिया गया। अपना बलिदान देकर गुरु तेग बहादुर ने न केवल कश्मीरी पंडितों के धर्म की रक्षा कर ली साथ ही विधर्मियों को संदेश भी दे दिया कि हिन्दू अपने धर्म पर ऐसे भी मिट सकता है। गुरु तेगबहादुर जी के बलिदान से ही मिली हिम्मत के कारण भाई जेता सिंह दिल्ली के चौराहे से गुरु तेग बहादुर जी का शीश मुगलों के गढ़ से लेकर आनंदपुर साहिब गए, जहाँ उनका ससम्मान अंतिम संस्कार किया गया। पूरा हुजूम रो रहा था, जय जय कार कर रहा था। सबने एक साथ गुरु तेग बहादुर को तभी नाम दे दिया हिंद दी चादर।

गुरु तेग बहादुर के बलिदान के समय उनके पुत्र गोविंद मात्र 9 वर्ष के ही थे। उन्हें ही गुरु की गद्दी सौंप दी गई। इतिहास साक्षी है,



अपने पिता और गुरु के बलिदान से गौरान्वित गुरु गोविंद सिंह ने न केवल खालसा सेना की स्थापना की, वरन मुगलों से सशस्त्र संघर्ष भी किया। चारों बेटों का बलिदान हो गया, पर धर्म को सर्वोपरि रखा। मनुष्य को गुरु मानने की परम्परा को समाप्त कर गुरुग्रंथ साहिब को गुरु का दर्जा दे दिया। उन्होंने अपने पिता पर हुए अत्याचार को अपनी आंखों से देखा था, अपने चारो पुत्रों को उन्होंने खोया था। उनका मंथन था। हर कोई तो गुरु तेग बहादुर नहीं हो सकता, जो धर्म की बलिवेदी पर अपना शीश चढ़ा दे, हर कोई गोविंद भी नहीं हो सकता जो चार चार पुत्रों के बलिदान के बाद भी धर्म की आन के लिए जान देने को तैयार रहे। यदि तेग बहादुर टूट जाते तो क्या सिख धर्म बचता, गोविंद टूट जाता तो क्या पूरे पंजाब में कोई हिंदू बचता। भविष्य में क्या होगा पता नहीं, इसलिए गुरु ग्रंथ साहिब ही गुरु होंगे, यह परंपरा गुरु गोविंद सिंह जी ने प्रारंभ की। इसका अनुशरण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी किया। संघ भी किसी व्यक्ति को गुरु न मान कर परम पवित्र भगवा ध्वज को ही गुरु मानता है।

वास्तव में जैसे गुरु तेगबहादुर जी हिंद दी चादर अपने को सिद्ध करके बलिदान हो गए, उसी राह पर चलते हुए आज भी जन जागरण की आवश्यकता है और संघ यह कार्य कर रहा है। परम पवित्र भगवा ध्वज को हिंद दी चादर मानकर।



जय क्षेत्रों में नेतृत्व कर रही हैं आज की नारी

गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा में प्रेरणा विमर्श 2026 का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की थीम 'उत्कर्ष - नारी सम्मान और युवा स्वाभिमान' थी। कार्यक्रम में सृजन संवाद के अंतर्गत 'स्वाभिमानी नारी, सशक्त भारत और युवा सोच, नया भारत विषयों पर लेखक, पत्रकार और प्रबुद्ध विचारकों ने समानांतर चले दो सत्रों में वैचारिक मंथन किया।



सत्र चर्चा में स्वाभिमानी नारी, सशक्त भारत विषययक सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख नरेंद्र ठाकुर ने कहा कि परिवार समाज को जोड़ता है। भारतीय संस्कार और परम्पराएं परिवार को जोड़ने का काम करती हैं। नई पीढ़ी तक संस्कारों को ले जाने का कार्य परिवार की महिला की अधिक है। घर की दादी, नानी और चाची इन संस्कारों को आगे बढ़ाती हैं। पुरुषों को महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। दरअसल, परिवार जैसा होगा वैसा समाज बनेगा और वैसा ही राष्ट्र होगा।

इस दौरान प्रसिद्ध योग विशेषज्ञ निवेदिता जोशी ने कहा कि महिलाओं की जिम्मेदारी उनके अधिकारों से तय नहीं होनी चाहिए। महिलाएं ही खाना बनाएंगी, बच्चे पालेंगी; इस सोच को बदलने से ही समाज में बदलाव आएगा। स्वाभाविक रूप से ये बदलाव दिख भी रहा है। शारीरिक शक्ति तभी मिलेगी जब मानसिक शक्ति बेहतर होगी।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए निदेशक, भविष्य प्रौद्योगिकी प्रबंधन निदेशालय रंजना मल्लामल्ली ने कहा कि जब तक परिवार साथ नहीं होता तब तक आप अपना सौ फीसदी नहीं दे सकते। परिवार के साथ सामंजस्य बनाना जरूरी है। महिलाएं स्वास्थ्य का भी ध्यान रखें। आज महिलाएं जय क्षेत्रों में नेतृत्व कर रहीं हैं। तकनीक विशेषज्ञ से लेकर एंटरप्रेन्योर तक है। कहा जाय तो आज का वक्त आधी आबादी के लिए स्वर्ण काल है। आज हर क्षेत्र में नारी की बादशाहत है। अगर कठिन लक्ष्य रखेंगे तो सभी साथ देते हैं।

संसद टीवी एंकर दीक्षा कोहली ने सत्र का संचालन करते हुए कहा कि नई मंत्र एक शब्द नहीं बल्कि उपासना है नई विश्व निर्मात्री है और प्रथम गुरु माँ ही होती है। सत्र के अंत में प्रतिभागियों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए मंचाशीन अतिथियों ने उनकी जिज्ञाशाओं का समाधान किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रियंका सिंह और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रदीप कुमार ने किया।



नवाचार से युवा गढ़ रहे नया भारत



युवा सोच, नया भारत विषय पर आयोजित समानांतर सत्र में युवा राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति हैं। क्या वे सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं? क्या उनमें समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध है? AI के दौर में सकारात्मक सोच और नवाचार के साथ युवाओं को राष्ट्र निर्माण का सशक्त भागीदार कैसे बनाया जाए, इन्हीं महत्वपूर्ण विषयों पर विशिष्ट वक्ताओं के साथ आईएमएस गाजियाबाद के प्रो. (डॉ.) अनिल निगम ने सत्र का संचालन करते हुए कहा, आज युवा को फैक्ट और डाटा चैक कर ही सूचनाओं को आगे बढ़ाना चाहिए।

युवा सोच, नया भारत विषयक सत्र में चर्चा करते हुए आईआईएमटी ग्रुप ऑफ कॉलेज के प्रबंध निदेशक डॉ. मयंक अग्रवाल ने कहा कि युवाओं को वक्त से तालमेल बिठाने के लिए ज्यादा तेज दौड़ना होगा। सीखने की कोई उम्र नहीं होती है, इसलिए समाज में मौजूद ऐसी शख्सियतों से सीखने की जरूरत है, उन्हें प्रेरणास्रोत बनाने की आवश्यकता है।

जबकि एनडीटीवी की एंकर रंजना राठौर ने कहा कि युवाओं को समाज में हो रहे बदलावों पर नजर रखने की जरूरत है। सोशल मीडिया में प्रतिस्पर्धा से दबाव में नहीं आना चाहिए। डिजिटल जागरूकता जरूरी है। सफल व्यक्ति अचीव करता है। जबकि समझदार व्यक्ति पढ़ा लिखा व्यक्ति होता है।

चर्चा में टाइम्स नाउ नवभारत एंकर साक्षी मिश्र ने भाषा की महत्ता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मेहनत का कोई विकल्प नहीं है, इसलिए युवाओं को खूब पढ़ने और लिखने की जरूरत है। अपने अनुभव का जिक्र करते हुए उन्होंने भाषा को सीखने की अपनी जिजीविषा भी बताई।

इस सत्र का मंच संचालन डॉ. नीलम कुमारी ने किया और धन्यवाद ज्ञापन प्रो. हरेंद्र सिंह ने किया। वैशाली मित्तल ने युवाओं और नारी शक्ति पर स्वरचित कविता प्रस्तुति की। जबकि वंशिका सेठी ने समापन पर वंदे मातरम का गान किया। सत्र के अंत में प्रतिभागियों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए मंचाशीन अतिथियों ने उनकी जिज्ञाशाओं का समाधान किया।



भारतीय युवा की नई क्रांति विरोध नहीं, राष्ट्रनिर्माण



अभय श्रीवास्तव
लेखक

भारत की युवा शक्ति सदैव परिवर्तन की वाहक रही है। इतिहास साक्षी है कि जब युवाओं ने अपने साहस, संकल्प और सामर्थ्य को राष्ट्रहित से जोड़ा, तब देश को नई दिशा मिली। किंतु प्रत्येक पीढ़ी के सामने एक प्रश्न खड़ा होता है क्रांति किसलिए और किस दिशा में? क्या क्रांति का अर्थ केवल विरोध करना, आक्रोश व्यक्त करना और अपनी असहमति को नारों तक सीमित रखना है, अथवा उसका वास्तविक उद्देश्य एक बेहतर समाज और सशक्त राष्ट्र का निर्माण करना है?

आज भारत के युवाओं के सामने इस प्रश्न पर विचार करने का समय है। समस्याओं पर प्रश्न उठाना आवश्यक है, लेकिन प्रश्न उठाने के साथ समाधान खोजना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। भारत को ऐसी युवा क्रांति की आवश्यकता है, जो विरोध की ऊर्जा को निर्माण की शक्ति में और असंतोष को सकारात्मक संकल्प में बदल दे।

क्रांति का अर्थ : विरोध नहीं, सकारात्मक परिवर्तन : क्रांति का अर्थ है जड़ता को तोड़ना, नई संभावनाओं का निर्माण करना और समाज को प्रगति की दिशा में आगे बढ़ाना। लेकिन प्रत्येक परिवर्तन अपने आप में प्रगति नहीं होता। परिवर्तन तभी सार्थक है, जब वह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के जीवन में सकारात्मक सुधार लाए।

लोकतंत्र में असहमति व्यक्त करना, गलत नीतियों पर प्रश्न उठाना और शांतिपूर्ण विरोध करना नागरिकों का अधिकार है। अन्याय और भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाना भी आवश्यक है। लेकिन विरोध अपने आप में अंतिम लक्ष्य नहीं होना चाहिए। उसका उद्देश्य समस्या का समाधान और व्यवस्था में आवश्यक सुधार होना चाहिए।

युवा शक्ति का वास्तविक सामर्थ्य केवल किसी बात को अस्वीकार करने में नहीं, बल्कि उससे बेहतर विकल्प प्रस्तुत करने में है। किसी समस्या पर आक्रोश व्यक्त करना सरल है, लेकिन उसके कारणों को समझना, व्यावहारिक समाधान खोजना और उसे लागू करने में योगदान देना अधिक चुनौतीपूर्ण है। युवाओं को यह समझना चाहिए कि विरोध तभी सार्थक है, जब वह समाधान का मार्ग खोले। केवल असंतोष व्यक्त करते रहना परिवर्तन नहीं है; असंतोष को रचनात्मक प्रयास में बदलना ही वास्तविक परिवर्तन है। क्रांति का मूल्य इस बात से नहीं आंका जाना चाहिए कि कितने नारे लगाए गए, बल्कि इससे कितनी समस्याओं का समाधान हुआ और समाज कितना आगे बढ़ा।

भारतीय संस्कृति का संदेश : कर्म से आएगा परिवर्तन - भारतीय चिंतन में कर्म, कर्तव्य और आत्मानुशासन को जीवन की प्रगति का आधार माना गया है। हमारी परंपरा व्यक्ति को केवल परिस्थितियों की आलोचना करने वाला नहीं, बल्कि अपने कर्मों से परिस्थितियों को बदलने वाला मानती है।

श्रीमद्भगवद्गीता का संदेश है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।

– श्रीमद्भगवद्गीता, २.४७

अर्थात् मनुष्य का अधिकार कर्म करने में है, केवल उसके फल पर नहीं; इसलिए उसे अकर्मण्यता से दूर रहना चाहिए।

युवा क्रांति के संदर्भ में यह संदेश अत्यंत प्रासंगिक है। राष्ट्र को बदलने की आकांक्षा रखने वाले युवाओं को स्वयं से पूछना चाहिए कि वे परिवर्तन के लिए क्या कर रहे हैं। दूसरों से अपेक्षा करना सरल है, लेकिन अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करना वास्तविक चरित्र की पहचान है। क्रांति का आरंभ विचारों से होता है, विचारों को दिशा मिलती है संकल्प से और संकल्प को परिणाम तक पहुँचाते हैं कर्म। यदि युवा अपने ज्ञान, परिश्रम और प्रतिभा का उपयोग समाज की समस्याओं को सुलझाने में करें, तो छोटे-छोटे प्रयास भी बड़े परिवर्तन का आधार



बन सकते हैं। किसी गाँव में शिक्षा सुधारना, जल संरक्षण की पहल करना या जरूरतमंद विद्यार्थियों को पढ़ाना भी सकारात्मक क्रांति के उदाहरण हैं।

स्वामी विवेकानंद का आह्वान : उठो, जागो और आगे बढ़ो

भारत की युवा चेतना के प्रमुख प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को आत्मविश्वास, साहस, चरित्र और कर्मशीलता का संदेश दिया। उनका विचार था कि राष्ट्र की उन्नति के लिए ऐसी युवा शक्ति चाहिए, जो अपनी क्षमताओं को पहचाने और उन्हें किसी महान उद्देश्य से जोड़े।

कठोपनिषद् का प्रसिद्ध मंत्र है-

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।। - कठोपनिषद्, १.३.१४

अर्थात् उठो, जागो और श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ो।

यह संदेश आज भी युवा पीढ़ी के लिए प्रासंगिक है। उठने का अर्थ केवल किसी के विरुद्ध खड़ा होना नहीं, बल्कि निष्क्रियता से बाहर निकलना भी है। जागने का अर्थ केवल व्यवस्था की कमियाँ देखना नहीं, बल्कि अपनी क्षमताओं और जिम्मेदारियों को पहचानना भी है।

युवाओं को यह समझना होगा कि वास्तविक क्रांति पहले व्यक्ति की सोच में जन्म लेती है। जब निराशा की जगह आत्मविश्वास, निर्भरता की जगह आत्मनिर्भरता और शिकायत की जगह समाधान लेने लगता है, तब परिवर्तन की नींव पड़ती है। स्वामी विवेकानंद से प्रेरित युवा चेतना का अर्थ है अपनी शक्ति को पहचानना और उसे राष्ट्रहित में लगाना। प्रेरणा तभी सार्थक होती है, जब वह विचारों से आगे बढ़कर आचरण और कर्म में दिखाई दे।

राष्ट्रनिर्माण : युवा क्रांति का वास्तविक लक्ष्य : भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि में राष्ट्र केवल भौगोलिक सीमाओं का नाम नहीं, बल्कि साझा इतिहास, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक संबंधों और सामूहिक आकांक्षाओं से निर्मित एक जीवंत इकाई है। राष्ट्र की शक्ति उसके नागरिकों के चरित्र, परिश्रम और परस्पर सहयोग में निहित होती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारपरंपरा में चरित्र निर्माण, अनुशासन, सेवा, सामाजिक समरसता और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध को विशेष महत्त्व दिया गया है। ये मूल्य सकारात्मक युवा क्रांति की मजबूत आधारशिला बन सकते हैं।



राष्ट्रनिर्माण केवल बड़े राजनीतिक परिवर्तन या विशाल परियोजनाओं से नहीं होता। जब युवा ईमानदारी से अपना कर्तव्य निभाता है, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करता है और जरूरतमंद लोगों की सहायता करता है, तब भी वह राष्ट्रनिर्माण में योगदान देता है। कोई युवा तकनीक के माध्यम से किसानों की समस्याओं का समाधान करे, कोई उद्यम स्थापित करके रोजगार पैदा करे या कोई विद्यार्थी वंचित बच्चों को शिक्षित करने का संकल्प ले, ये सभी सकारात्मक क्रांति के उदाहरण हैं।

इन प्रयासों में शायद बड़े नारों का आकर्षण न हो, लेकिन इनके परिणाम समाज में वास्तविक परिवर्तन ला सकते हैं। राष्ट्र के प्रति समर्पण का अर्थ समस्याओं पर प्रश्न न उठाना नहीं है। इसका अर्थ है कि प्रश्नों का उद्देश्य सुधार हो, विरोध का माध्यम लोकतांत्रिक हो और परिवर्तन का लक्ष्य जनहित हो। सच्ची राष्ट्रभक्ति केवल व्यवस्था से अपेक्षा करने में नहीं, बल्कि राष्ट्र की उन्नति के लिए अपनी भूमिका निभाने में भी प्रकट होती है।

नई युवा क्रांति : समस्या नहीं, समाधान बनिए : आज आवश्यकता है कि भारतीय युवा क्रांति की एक नई परिभाषा गढ़ें। ऐसी क्रांति, जिसमें साहस के साथ विवेक हो, असहमति के साथ संवाद हो और परिवर्तन की आकांक्षा के साथ निर्माण का संकल्प भी हो।

युवाओं को अन्याय और गलत नीतियों के विरुद्ध आवाज उठाने का अधिकार है। किंतु विरोध का माध्यम ऐसा होना चाहिए, जो समाधान में सहायक हो। हिंसा, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुँचाना और समाज में अनावश्यक वैमनस्य पैदा करना सकारात्मक परिवर्तन का विकल्प नहीं हो सकते। युवा अपनी ऊर्जा को स्थानीय समस्याओं के समाधान में लगा सकते हैं। वे शिक्षा, स्वच्छता, जल संरक्षण और रोजगार से जुड़े प्रयासों में योगदान दे सकते हैं। वे अपने गाँव, कस्बे या शहर में ऐसी पहल कर सकते हैं, जो दूसरों को भी प्रेरित करे। इसके लिए किसी बड़े मंच या विशेष पद की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है स्पष्ट उद्देश्य, सही दृष्टि और निरंतर कर्म की।

युवाओं को स्वयं से तीन प्रश्न पूछने चाहिएकृमैं जिस परिवर्तन की अपेक्षा करता हूँ, उसके लिए मैंने क्या किया है? जिस समस्या पर मुझे आक्रोश है, उसके समाधान में मेरा क्या योगदान है? और आने वाली पीढ़ी के लिए मैं कैसा भारत छोड़ना चाहता हूँ? इन प्रश्नों के उत्तर ही युवा ऊर्जा को सार्थक दिशा दे सकते हैं।भारत की युवा पीढ़ी के पास राष्ट्र के भविष्य को नई दिशा देने की क्षमता है। उसकी क्रांति का उद्देश्य केवल वर्तमान से असंतोष व्यक्त करना नहीं, बल्कि भविष्य के लिए बेहतर विकल्प तैयार करना होना चाहिए।

आइए, हम क्रांति को केवल विरोध का पर्याय मानने की सीमित सोच से बाहर निकलें। इसे आत्मनिर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रनिर्माण का संकल्प बनाएँ। भारत का भविष्य केवल इससे तय नहीं होगा कि उसके युवा किसके विरुद्ध खड़े होते हैं, बल्कि इससे भी तय होगा कि वे किस उद्देश्य के लिए खड़े होते हैं और अपने कर्मों से क्या निर्माण करते हैं।

सर्दियों में श्वसन संबंधी समस्याएं एवं बचाव

सर्दियों का मौसम अपने साथ ठंड, कोहरा और वायु प्रदूषण की चुनौती लेकर आता है। इस मौसम में खाँसी-जुकाम, फ्लू, ब्रोंकाइटिस, अस्थमा और सीओपीडी जैसी श्वसन संबंधी समस्याएँ बढ़ सकती हैं। विशेष रूप से दिल्ली-एनसीआर जैसे क्षेत्रों में स्मॉग और प्रदूषित हवा फेफड़ों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। ऐसे में बचाव, सही जीवनशैली और समय पर चिकित्सकीय परामर्श का महत्त्व बढ़ जाता है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत है श्वसन रोग विशेषज्ञ डॉ. कृष्ण गोपाल गुप्ता जी से एक विशेष वार्ता

डॉ. साहब, सर्दियों में श्वसन संबंधी बीमारियाँ बढ़ने के प्रमुख कारण क्या हैं?

सर्दियों में श्वसन संबंधी बीमारियाँ बढ़ने के कई कारण हैं। पहला, ठंडी और शुष्क हवा, दूसरा वायरस तीसरा वायु प्रदूषण, धूल, धुआँ और घर के भीतर पर्याप्त वेंटिलेशन न होना।

दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण, स्मॉग और कोहरे का हमारे फेफड़ों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

दिल्ली-एनसीआर में सर्दियों के दौरान वायु प्रदूषण एक गंभीर स्वास्थ्य चुनौती बन जाता है। प्रदूषित हवा के कारण साँस कि नली में सूजन, खाँसी, गले में जलन, सीने में जकड़न और साँस फूलने जैसी समस्याएँ होती हैं।

सर्दियों में बच्चों, बुजुर्गों और अस्थमा या COPD के मरीजों को किन विशेष सावधानियों की आवश्यकता होती है?

बच्चों के फेफड़े विकसित हो रहे होते हैं, जबकि बुजुर्गों और पहले से बीमार लोगों की सहनशीलता कम होती है। इन लोगों को सर्दियों में प्रदूषण के स्तर को देख कर ही घर से बाहर निकलना चाहिए, अनावश्यक बाहरी गतिविधियों को कम करना चाहिए और घर के भीतर प्रदूषण के स्रोतों को नियंत्रित करना चाहिए।



डॉ. कृष्ण गोपाल गुप्ता
M.B.B.S., D.T.C.D. M. D. and F.C.G.P.
परामर्श फिजीशियन एवं चेस्ट स्पेशलिस्ट
पूर्व विशेषज्ञ - टी बी एवं चेस्ट विभाग
ऐरा मेडिकल कॉलेज, लखनऊ

♦ बच्चों के लिए : उन्हें ठंड से बचाकर रखें, हाथों की सफाई की आदत डालें और प्रदूषण अधिक होने पर बाहर खेलने का समय सीमित करें। बच्चों के आसपास धूम्रपान बिल्कुल न करें।

♦ बुजुर्गों के लिए : ठंड से बचाव करें, पर्याप्त पानी पिएँ और अपनी नियमित दवाएँ समय पर लें।

♦ अस्थमा के मरीजों के लिए : डॉक्टर द्वारा निर्धारित इनहेलर नियमित रूप से इस्तेमाल करें और अपना रिलीवर इनहेलर उपलब्ध रखें। ठंडी हवा तथा प्रदूषण से बचें।

♦ सीओपीडी के मरीजों के लिए : संक्रमण से बचाव, निर्धारित दवाओं का नियमित सेवन और समय पर चिकित्सकीय जाँच बहुत आवश्यक है।

सुबह की सैर के लिए बाहर निकलना कितना सुरक्षित है, विशेषकर जब प्रदूषण का स्तर अधिक हो?

प्रदूषण अधिक होने पर खुले वातावरण में व्यायाम करना अथवा सैर करना नुकसानदायक हो सकता है। दिल्ली-एनसीआर में सर्दियों के दौरान सुबह के समय प्रदूषण अधिक होता है। इसलिए बच्चों, बुजुर्गों, अस्थमा और सीओपीडी के मरीजों को बाहर व्यायाम से बचना चाहिए। घर के अंदर हल्का व्यायाम या योग करें। बाहर सैर करना चाहते हैं तो ऐसा समय और स्थान चुनें जहाँ वाहनों का धुआँ कम हो। याद रखें कि नियमित शारीरिक गतिविधि जरूरी है, लेकिन उसे स्वच्छ हवा में करना अधिक लाभकारी है।

प्रदूषण से बचाव के लिए N95 मास्क और एयर प्यूरीफायर कितने प्रभावी हैं?

N95 मास्क और एयर प्यूरीफायर, दोनों प्रदूषण से बचाव में उपयोगी हो सकते हैं, बशर्ते उनका सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए।

N95 मास्क : यह हवा में मौजूद सूक्ष्म कणों को छानने में प्रभावी होता है। मास्क नाक और मुँह पर अच्छी तरह फिट होना चाहिए, क्योंकि किनारों से हवा आने पर इसकी प्रभावशीलता कम हो जाती है।

एयर प्यूरीफायर : घर के अंदर PM2-5 जैसे सूक्ष्म कणों को

कम करने में HEPA फिल्टर वाला उपयुक्त एयर प्यूरीफायर मदद कर सकता है।

सर्दियों में खाँसी-जुकाम होने पर घरेलू उपचार कब तक पर्याप्त हैं और किन लक्षणों में डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए?

सामान्य सर्दी-जुकाम प्रायः वायरल संक्रमण के कारण होता है और कई मामलों में सात से दस दिनों के भीतर सुधार होने लगता है। यदि लक्षण हल्के हैं, तो घरेलू उपायों से राहत मिल सकती है। लेकिन हर खाँसी को सामान्य जुकाम मानना उचित नहीं है। निम्नलिखित लक्षणों में चिकित्सकीय परामर्श लेना चाहिए-

♦ खाँसी लगातार बढ़ रही हो या चार पांच दिनों के बाद भी सुधार न हो।

♦ तेज या लगातार बुखार हो, अथवा बुखार ठीक होने के बाद दोबारा लौट आए।

♦ बलगम में खून आए या सीने में दर्द हो।

♦ साँस फूलने लगे, घरघराहट बढ़ जाए या पहले से मौजूद अस्थमा अथवा सीओपीडी के लक्षण बिगड़ जाएँ।

♦ बुजुर्ग, छोटे बच्चे या गंभीर पुरानी बीमारी से पीड़ित व्यक्ति अस्वस्थ हों।

♦ यदि साँस लेने में गंभीर कठिनाई हो, होंठ नीले पड़ने लगें, भ्रम हो या सीने में तेज दर्द हो, तो तुरंत आपातकालीन चिकित्सा सहायता लें।

क्या भाप लेना और काढ़ा पीना का सेवन श्वसन संबंधी समस्याओं में वास्तव में लाभकारी है?

इन उपायों से थोड़ी देर के लिए राहत मिल सकती है, लेकिन इन्हें श्वसन रोगों का मुख्य उपचार नहीं माना जा सकता।

फ्लू और निमोनिया से बचाव में टीकाकरण की क्या भूमिका है? किन लोगों को ये टीके लगवाने चाहिए?

टीकाकरण श्वसन संक्रमणों से बचाव का एक महत्त्वपूर्ण उपाय है। फ्लू और निमोनिया के लिए टीकों की भूमिका अलग-अलग होती है। टीका विशेष रूप से - छोटे बच्चे, बुजुर्ग व्यक्ति, अस्थमा आदि रोगों से पहले से पीड़ित व्यक्ति, ऐसे लोग जिनकी रोगों से लड़ने की क्षमता कम है, अथवा वे लोग जिन्हें बार बार संक्रमण होता हो, इन लोगों को टीका लगवाना चाहिए। किंतु इसके लिए डह्क्टर से व्यक्तिगत सलाह लेना आवश्यक है।

क्या बार-बार होने वाली खाँसी या साँस फूलने को केवल मौसम का असर समझना उचित है? फेफड़ों की जाँच कब आवश्यक हो जाती है?

बिल्कुल नहीं। बार-बार होने वाली खाँसी, साँस फूलना, सीने में जकड़न या लगातार घरघराहट को केवल मौसम का असर समझकर नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। ये लक्षण अस्थमा, सीओपीडी, एलर्जी, संक्रमण, टीबी या अन्य फेफड़ों की बीमारियों से संबंधित हो सकते हैं। कभी-कभी हृदय संबंधी समस्याएँ भी साँस फूलने का कारण बनती हैं। यदि खाँसी एक सप्ताह से अधिक बनी रहे, बार-बार लौटे, रात में बढ़े, खून के साथ आए या उसके साथ वजन कम होना, बुखार अथवा रात में पसीना आने जैसे लक्षण हों, तो चिकित्सकीय जाँच आवश्यक है। ऐसी कोई भी स्थिति हो तो डॉक्टर से तुरंत संपर्क करना चाहिए।

अंत में, सर्दियों में अपने फेफड़ों को स्वस्थ रखने के लिए आप पाठकों को कौन-सी पाँच प्रमुख सावधानियाँ अपनाने की सलाह देंगे?

मैं पाठकों को पाँच प्रमुख सावधानियाँ अपनाने की सलाह दूँगा, जो सरल होने के साथ-साथ दैनिक जीवन में भी आसानी से शामिल की जा सकती हैं।

1. वायु गुणवत्ता की जानकारी लेकर ही बाहर निकलें।

AQI पर नजर रखें। प्रदूषण अधिक होने पर सुबह की सैर, दौड़ने और खुले में भारी व्यायाम से बचें। जरूरत होने पर अच्छी फिटिंग वाला N95 मास्क इस्तेमाल करें।

2. ठंड और संक्रमण से बचाव करें।

मौसम के अनुसार कपड़े पहनें, हाथों की नियमित सफाई करें, खाँसते या छींकते समय मुँह ढकें और बीमार होने पर दूसरों के निकट संपर्क को सीमित रखें।

3. घर के भीतर स्वच्छ हवा बनाए रखें।

धूम्रपान, अगरबत्ती के अत्यधिक धुएँ, कचरा जलाने और खाना पकाने से उत्पन्न धुएँ से बचें।

4. स्वस्थ जीवनशैली अपनाएँ।

संतुलित आहार लें, पर्याप्त पानी पिएँ, अच्छी नींद लें और प्रदूषण कम होने पर नियमित शारीरिक गतिविधि करें।

5. लक्षणों को नजरअंदाज न करें।

लगातार खाँसी, साँस फूलना, सीने में दर्द या बार-बार घरघराहट होने पर डॉक्टर से संपर्क करें। अस्थमा और सीओपीडी के मरीज अपनी दवाएँ नियमित लें।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि फेफड़ों का स्वास्थ्य केवल सर्दियों में ही नहीं, बल्कि पूरे वर्ष हमारी प्राथमिकता होना चाहिए। स्वच्छ हवा, सही दिनचर्या, टीकाकरण और समय पर उपचार अपनाकर हम स्वयं को और अपने परिवार को अनेक श्वसन संबंधी समस्याओं से बचा सकते हैं।

भारत में ब्याज दरों में बढ़ोतरी का चक्र प्रारम्भ



प्रहलाद सबनानी
सेवानिवृत्त उपमहाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक

भारतीय रिजर्व बैंक ने दिनांक 7 अक्टूबर 2026 को घोषित अपनी मौद्रिक नीति (मोनेटरी पॉलिसी) के माध्यम से रेपो दर में 25 आधार बिंदुओं की वृद्धि करते हुए इसे 5.25 प्रतिशत से बढ़ाकर 5.50 प्रतिशत कर दिया है। भारत में, फरवरी 2023 के पश्चात, प्रथम बार रेपो दर में वृद्धि की घोषणा की गई है। अब संभवतः समस्त बैंक अपने ऋणों पर ब्याज दरों में बढ़ौतरी की घोषणा करेंगे। दरअसल, भारत ही नहीं बल्कि विश्व के अन्य देशों में भी मुद्रा स्फीति की दर में वृद्धि देखी जा रही है और मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने के उद्देश्य से जापान, अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा आदि देश पहले से ही ब्याज दरों में वृद्धि की घोषणा कर चुके हैं। भारतीय रिजर्व बैंक के पास भी मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने के उद्देश्य से रेपो दर में वृद्धि करने के अतिरिक्त और कोई उपाय था भी नहीं। रेपो दर में वृद्धि वित्तीय बाजार में लगाए जा रहे अनुमान के आधार पर ही रही है। भारतीय रिजर्व बैंक ने यह भी स्पष्ट किया है कि निकट भविष्य में रेपो दर में कमी की सम्भावना अब कम ही है बल्कि वित्तीय बाजार का अनुमान है कि दिसम्बर माह में होने वाली भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति कमेटी की बैठक में भी संभवतः रेपो दर में 25 आधार बिंदुओं की पुनः वृद्धि की घोषणा की जाएगी।

दरअसल वैश्विक स्तर पर वित्तीय बाजार में अनिश्चितता का माहौल बना हुआ है क्योंकि रूस-यूक्रेन युद्ध, इजराईल-हमास युद्ध, ईरान-अमेरिका युद्ध तो लम्बे समय से चल ही रहा था अब सऊदी अरब-हूथी युद्ध भी छिड़ गया है एवं इसमें पाकिस्तान एवं टर्की भी शामिल हो गए हैं। इस सबका विपरीत प्रभाव वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की आपूर्ति पर पड़ा है एवं कच्चे तेल की कीमतें आसमान छूने लगी हैं जिससे विश्व के कई देशों में मुद्रा स्फीति की स्थिति लगातार गंभीर होती जा रही है। भारतीय रिजर्व बैंक ने वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए भारत में मुद्रा स्फीति के अनुमान को बढ़ाया है। पूर्व में, वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए भारत में मुद्रा स्फीति के 5 प्रतिशत तक रहने का अनुमान लगाया गया था, जिसे अब बढ़ाकर 5.2 प्रतिशत कर दिया गया है। मुद्रा स्फीति, एक गम्भीर समस्या के रूप में उभर कर सामने आ रही है, इसे नियंत्रित करना अति आवश्यक है क्योंकि इसका सबसे अधिक विपरीत प्रभाव गरीब नागरिकों पर अति गम्भीर रूप से पड़ता है। मुद्रा स्फीति के लगातार बढ़ने से नागरिकों की क्रय शक्ति कमजोर हो जाती है। पूरे विश्व में लगभग समस्त देशों द्वारा मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने के उद्देश्य से ब्याज दरों में वृद्धि की जाती है ताकि नागरिक अपने खर्चों को बढ़ाने के लिए निरुत्साहित हों एवं इस धनराशि को वे बैंकों में जमा करें एवं साथ ही नागरिक बैंकों से ऋणराशि लेने हेतु भी निरुत्साहित हों क्योंकि ब्याज दर के बढ़ाने से ऋणराशि पर अब अधिक ब्याज देना होगा। इससे बाजार में उत्पादों की मांग में कमी आती है एवं उत्पादों की कीमतें कम होने लगती हैं और अंततः मुद्रा स्फीति पर नियंत्रण स्थापित होने लगता है। परंतु, ब्याज दरों में एक सीमा से अधिक वृद्धि करने से आर्थिक विकास दर विपरीत रूप से प्रभावित होने लगती है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में तो मुद्रा स्फीति का उल्लेख ही नहीं मिलता है क्योंकि उत्पादों की



पर्याप्त आपूर्ति बाजार में बनाए रखी जाती थी, बल्कि शास्त्रों में उत्पादों के दाम कम होते जाने का उल्लेख जरूर मिलता है। वर्तमान स्थिति बिलकुल भिन्न है, बाजार में उत्पादों की मांग बढ़ जाती है परंतु आपूर्ति सुनिश्चित नहीं हो पाती है, इससे इन उत्पादों की कीमतों में वृद्धि दृष्टिगोचर होने लगती है।

प्राचीन भारतीय आर्थिक दर्शन के अनुसार, मूल्य वृद्धि को बाजार में वस्तुओं/उत्पादों की आपूर्ति को बढ़ाकर नियंत्रित किया जाना चाहिए न कि इन उत्पादों की मांग में कमी करने के प्रयास कर इन वस्तुओं/उत्पादों की कीमतों पर नियंत्रण स्थापित किया जाय। पूंजीवादी व्यवस्था के अंतर्गत ब्याज दर में की गई वृद्धि के कारण बाजार पर होने वाले नकारात्मक प्रभाव को आंकने का प्रयास ही नहीं किया जाता हैं। यदि उत्पादों की मांग में कमी करने के प्रयास किए जाएंगे तो इन उत्पादों का निर्माण कम होगा, इससे विनिर्माण इकाईयों एवं इन इकाईयों में कार्यरत श्रमिकों पर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। उत्पादन कम होने के चलते विनिर्माण इकाईयों द्वारा बहुत सम्भव है कि श्रमिकों की छटनी की जाने लगे। इससे देश में बेरोजगारी फैल सकती है। परंतु, भारत में इस तरह की समस्या वर्तमान परिस्थितियों के बीच दिखाई नहीं देती है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा भी यह सम्भावना व्यक्त की गई है कि रेपो दर में की गई वृद्धि का भारतीय अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ने की सम्भावना लगभग शून्य है, क्योंकि भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा वित्तीय

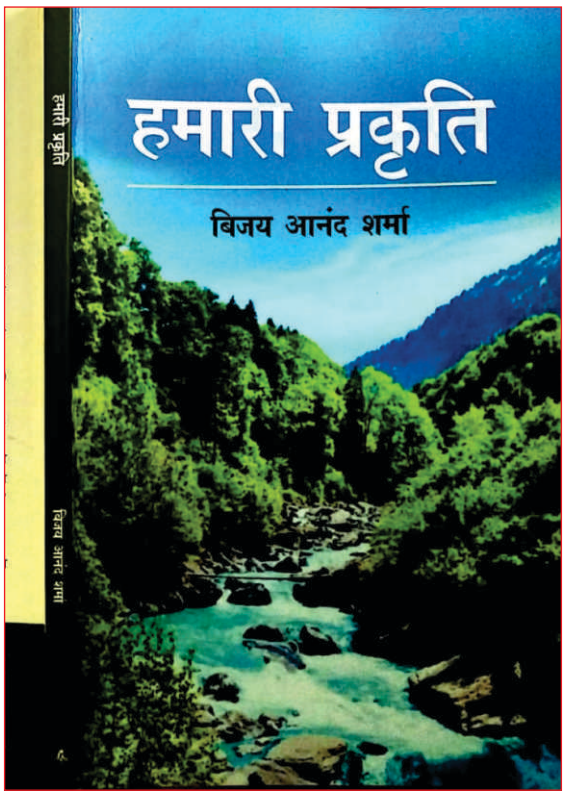


वर्ष 2026-27 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में होने वाली वृद्धि दर को संशोधित कर इसे पूर्व के अनुमान 6.7 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.1 प्रतिशत कर दिया गया है। अन्यथा, सामान्यतः ब्याज दरों में वृद्धि का आर्थिक विकास दर पर विपरीत प्रभाव दिखाई देता है। भारत में आर्थिक विकास दर मजबूत बनी हुई है। हाल ही के समय में विशेष रूप से विनिर्माण के क्षेत्र एवं सेवा के क्षेत्र में आकर्षक वृद्धि दर दर्ज हुई है। विभिन्न उत्पादों के निर्यात भी तेज गति से बढ़ रहे हैं। निजी क्षेत्र में निवेश भी अब बढ़ने लगा है जबकि सरकारी क्षेत्र में निवेश तो पहिले से ही मजबूत बना हुआ है। बैंकों द्वारा प्रदान की जाने वाली ऋणराशि में अतुलनीय वृद्धि दिखाई दे रही है एवं वस्तु एवं सेवा कर तथा आय कर एवं कारपोरेट कर के संग्रहण में मजबूत वृद्धि दिखाई दे रही है। भारत उपभोग आधारित अर्थव्यवस्था है अतः स्थानीय स्तर पर निर्मित उत्पादों का बाजार भारत में ही उपलब्ध रहता है, केंद्र सरकार की नीतियों के चलते इन उत्पादों के अन्य देशों से आयात को निरुत्साहित किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं, अन्यथा यदि इन उत्पादों का आयात आसानी से होने दिया जाय तो सम्भव है कि इन उत्पादों के साथ मुद्रा स्फीति भी आयातित होने लगे, जैसा महंगे कच्चे तेल के आयात से हो रहा है। भारत में बढ़ रही मुद्रा स्फीति के लिए कुछ हद्द तक अन्य देशों से आयातित उत्पादों (स्वर्ण, इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद, कच्चा तेल आदि) की बढ़ी हुई कीमतें भी जिम्मेदार हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा रेपो दर में 25 आधार बिंदुओं की वृद्धि के निर्णय के पीछे एक और महत्वपूर्ण कारण जिम्मेदार है। दरअसल, अमेरिका की केंद्रीय बैंक यूएस फेड रिजर्व ने यू एस फेड दर में वृद्धि की घोषणा की है। इससे, अमेरिकी में बांड यील्ड में अतुलनीय वृद्धि ध्यान में आई है। 30 वर्षीय बांड यील्ड बढ़कर 5.60 प्रतिशत के स्तर को पार कर गई है, जो वर्ष 2002 के बाद से सबसे अधिक है। इससे विदेशी संस्थागत निवेशक, तेजी से विकास कर रही अर्थव्यवस्थाओं में से अपने निवेश को निकालकर अमेरिकी बांड में अपना निवेश बढ़ा रहे हैं। इसके चलते भारत सहित कई देशों की मुद्राओं की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेजी से गिर रही है। अतः अपने देश की मुद्रा को अंतरराष्ट्रीय बाजार में मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से भी कई देशों द्वारा ब्याज दरों में वृद्धि की जा रही है ताकि विदेशी निवेश को अपने देश में आकर्षित किया जा सके। भारत में रेपो दर में वृद्धि से भारत के बांड बाजार में भी भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी किए जाने वाले बांड पर यील्ड में सुधार होगा जिससे विदेशी निवेशक भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी किए जाने वाले बांड में अपना निवेश बढ़ा सकते हैं।

प्रकृति : दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा

प्रकृति हमारे जीवन के चारों ओर उपस्थित होकर भी आधुनिक जीवन की आपाधापी में कहीं पीछे छूटती जा रही है। ऐसे समय में बिजय आनंद शर्मा कृत 'हमारी प्रकृति' केवल पर्यावरण पर लिखी गई पुस्तक नहीं, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बीच टूटते जा रहे आत्मीय संबंध को फिर से पहचानने का एक संवेदनशील प्रयास है। पुस्तक का मूल स्वर प्रकृति के प्रति प्रेम, उसके संरक्षण की चिंता और उसके साथ संतुलित जीवन जीने की आवश्यकता से निर्मित होता है। लेखक प्रकृति को केवल पेड़-पौधों, नदियों, वनों और पर्वतों के रूप में नहीं देखते, बल्कि उसे जीवन की ऐसी व्यापक व्यवस्था मानते हैं जिसमें मनुष्य सहित प्रत्येक जीव का अस्तित्व एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है।



पुस्तक की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें प्रकृति को किसी दूरस्थ या केवल वैज्ञानिक विषय के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया है। लेखक के लिए प्रकृति हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है। पेड़ों की हरियाली, पक्षियों की आवाज, बहती नदी, झरनों का जल, समुद्र की लहरें, बदलती ऋतुएँ और वन्य जीव आदि इन सभी में लेखक जीवन का संगीत सुनते हैं। प्रकृति के इन विविध रूपों के माध्यम से वे पाठक को यह अनुभव कराने का प्रयास करते हैं कि सुकून किसी कृत्रिम साधन में नहीं, बल्कि प्रकृति के निकट रहने में निहित है।

लेखक की दृष्टि को उनके झारखंड के प्रारंभिक जीवन-अनुभव विशेष गहराई प्रदान करते हैं। पुस्तक के परिचय से ज्ञात होता है कि उनका बचपन झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले के चाईबासा जैसे क्षेत्र में बीता, जहाँ ग्राम और वन जीवन से उनका निकट परिचय रहा। ग्रामीण परिवेश और प्रकृति के बीच बिताया गया यह अनुभव पुस्तक में केवल स्मृति के रूप में नहीं, बल्कि प्रकृति को देखने की उनकी दृष्टि के आधार के रूप में दिखाई देता है। वन, ग्राम, मिट्टी, पेड़-पौधे और प्राकृतिक परिवेश के साथ उनका प्रारंभिक जुड़ाव संभवतः यही कारण है कि पुस्तक में प्रकृति के प्रति आत्मीयता और अपनत्व का भाव बार-बार उभरता है। यही व्यक्तिगत अनुभव पुस्तक को केवल उपदेशात्मक पर्यावरण-लेखों का संग्रह बनने से बचाते हैं।

'हमारी प्रकृति' में वन, पर्यावरण, सागर, ऋतु-चक्र, जीव-जंतु, इच्छाशक्ति तथा महानगरीय जीवन जैसे विभिन्न पक्षों को प्रकृति के व्यापक संदर्भ से जोड़ा गया है। विशेष रूप से वन पर लेखक का विचार उल्लेखनीय है। वन को वे केवल संसाधनों के भंडार के रूप में नहीं, बल्कि जैव-विविधता, जलवायु संतुलन और मानव आजीविका के आधार के रूप में देखते हैं। इसी प्रकार ऋतुओं के वर्णन में प्रकृति के परिवर्तनशील स्वरूप को रेखांकित करते हुए लेखक आधुनिक शहरीकरण, औद्योगीकरण, प्रदूषण और वृक्षों की कटाई से उत्पन्न पर्यावरणीय संकट की ओर भी संकेत करते हैं।

पुस्तक का एक महत्वपूर्ण पक्ष महानगरीय जीवन और प्रकृति के बीच बढ़ती दूरी का चित्रण है। तेज रफ्तार जीवन, व्यस्त दिनचर्या और निरंतर बढ़ती भौतिक आवश्यकताओं के बीच मनुष्य जिस सुकून की तलाश करता है, उसका उत्तर लेखक प्रकृति में खोजते हैं। इस दृष्टि से पुस्तक का संदेश केवल पर्यावरण संरक्षण तक सीमित नहीं रहता, बल्कि स्वस्थ और संतुलित जीवन की ओर भी संकेत करता है। भाषा पुस्तक की एक और विशेषता है। लेखक ने अपेक्षाकृत सरल, सहज और बोधगम्य हिंदी का प्रयोग किया है, जिससे विषय की गंभीरता के बावजूद पाठक पर बोझ नहीं पड़ता।

कुल मिलाकर 96 पृष्ठों की यह रचना प्रकृति को देखने की दृष्टि को संवेदनशील बनाती है। यह हमें याद दिलाती है कि पृथ्वी केवल हमारे उपयोग की वस्तु नहीं, बल्कि हमारा साझा घर है। झारखंड की प्रकृति से मिले जीवनानुभवों से निकली यह पुस्तक पाठक को प्रकृति के सौंदर्य का आनंद लेने के साथ-साथ उसके संरक्षण के प्रति अपने दायित्व को समझने की प्रेरणा देती है।

समीक्षक - कुणाल कुमार शांडिल्य

आत्मनिर्भरता सफलता की पहली सीढ़ी



पूनम भटनागर
लेखिका

हम सपने देख तो सकते हैं, पर पूरे आत्मनिर्भर होकर ही किए जाते हैं। आत्मनिर्भर होने का अर्थ है, स्वयं से कार्य करना। कोई भी कार्य करने में हम प्रवीण नहीं होंगे, स्वयं से नहीं कर पाएंगे तो किसी दूसरे से भी क्या करवा पाएंगे। विशेषतः आर्थिक, सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर होना व्यक्ति के लिए अति आवश्यक है। ऐसी ही हम एक आत्मनिर्भर महिला की कहानी साझा करते हैं। इन्होंने आत्मनिर्भर होने का फैसला अपने खराब हालातों के चलते लिया।

मुरादाबाद के पीतल व्यवसाय से कौन परिचित नहीं हैं। आज के समय में यह व्यवसाय बेहद फल फूल रहा है। पीतल के सजावटी सामान व वस्तुएं हमारी रोजमर्रा जिंदगी में प्रयुक्त होते हैं। वैश्विक स्तर पर अपनी पीतल की हस्तशिल्प कला के प्रसिद्ध इसे 'पीतल नगरी' भी कहा जाता है। इसी पीतल नगरी में चमन जहां की कहानी एक साधारण घरेलू महिला से सफल उद्यमी बनने की, और अनेकों महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की कहानी है।



इस पीतल के व्यवसाय में हमेशा से ही पुरुषों का वर्चस्व रहा है। अधिकांश काम पुरुषों के द्वारा ही संपन्न होते। महिलाओं का कार्य साफ सफाई और पैकेजिंग तक था। चमन जहां ने इन बेड़ियों को तोड़कर रूढ़िवादिता को बदला।

शून्य से शुरूआत : शुरुआत में उनके पास न तो बड़ा बिजनेस बैकग्राउंड था, न कोई और पहुंच। उन्होंने माल की ढुलाई से लेकर फिनिशिंग तक सारा कार्य खुद सीखकर किया।

छोटे पैमाने से कारखाने तक : अपनी कड़ी मेहनत के दम पर एक छोटी वर्कशॉप स्थापित की और अपने द्वारा सामान को कारखाने तक ले कर आई।

काम करने का तरीका : उनके काम करने के तरीके में महिलाओं को मुख्यधारा में लाना है। वह अपनी वर्कशॉप में महिलाओं को पीतल की वस्तुओं की नक्काशी और पोलिशिंग में आगे ले कर आती है।

कौशल विकास : वह महिलाओं को आधुनिक मशीनों के साथ, (लाभ लगाना, नक्काशी तथा फिनिशिंग भी सिखाती है) जिससे वे अंतरराष्ट्रीय मानकों पर खरे उतरे।

गुणवत्ता और डिजाइन पर फोकस : वे पारंपरिक डिजाइन के साथ आधुनिक स्तर के डिजाइन के लिए एल्यूमीनियम का उपयोग कर अंतरराष्ट्रीय स्तर के डिजाइन बनाने की कौशिश करती है।

आत्मनिर्भर कैसे बनीं: उनका मानना था कि महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना चाहिए। और इसके लिए उन्होंने पीतल के व्यवसाय से संबंधित सभी पहलू स्वयं सीखें। और फिर उद्यमिता के क्षेत्र में सारा बिजनेस खुद संभालते हुए आर्थिक स्वावलंबन को प्राप्त किया।

घर घर रोजगार : उन्होंने स्वयं को ही स्थापित नहीं किया वरन् कई अन्य महिलाओं के रोजगार का साधन भी बनी। आज ऐसी महिलाएं जो ज्यादा घर से नहीं निकल सकती, वे सुरक्षित केन्द्रों पर जाकर इनके साथ काम कर अपने घर में ही रोजगार प्राप्त करतीं हैं। इन्होंने उनके लिए सरकारी सहायता का भी बंदोबस्त किया है।

इस पीतल नगरी में एक उद्यमिता चमन जहां की कार्य प्रणाली, उनका व्यवहार व बिजनेस के देखने का नजरिया एक प्रेरणादाई स्तर का रहा है। उन्होंने पुरुष प्रधान समाज में एक सफल उद्यमी की छवि बनाई। कच्चे माल की ढुलाई से लेकर उसे 1000 डिग्री पर पिघलाकर कर सांचे में ढाल कर उनसे पीतल की विभिन्न वस्तुएं तैयार कर, उनपर पोलिशिंग व फिनिशिंग कर उन्हें कारखाने तक लाना सारे कार्य में वे साथ होती है उन्होंने एक श्रमसाध्य उद्योग को ही नहीं अपनाया अपितु आधुनिक प्रबंधन से उसे नई ईकाईयों व ऊंचाईयों पर भी पहुंचाया।

इस प्रकार चमन जहां ने पारंपरिक हुनर को आधुनिक स्तर से सजा, संवार कर पीतल की नगरी में बिजनेस एंपायर बना कर आत्मनिर्भर होने के सबूत की जीती जागती पहचान है। इसलिए ही आत्मनिर्भरता को सफलता की पहली सीढ़ी माना जाता है।

व्यंग्य

संविधान की किताब चुनावी सपने और बेताल का सवाल

– डॉ. रघुनाथ सिंह

नवंबर का महीना था। दिल्ली की राजनीतिक हवाओं में संविधान दिवस की तैयारियां चल रही थीं। संसद के गलियारों से लेकर चुनावी मंचों तक संविधान की चर्चा थी। इसी बीच विक्रम एक बार फिर बेताल को अपने कंधे पर लादकर श्मशान की ओर चल पड़े। बेताल अपनी रहस्यमयी हँसी हँसा और बोला, "राजन! आज मैं तुम्हें भारतीय राजनीति के उस रंगमंच की कथा सुनाता हूँ, जहाँ संविधान की किताब मुख्य पात्र है। इस नाटक में एक ऐसे नेता भी हैं, जो संविधान की प्रति हाथ में लेकर लोकतंत्र की रक्षा की बात करते हैं, लेकिन चुनावी नतीजों के बाद राजनीतिक पटकथा में नए अध्याय जुड़ जाते हैं। विक्रम हौले से मुस्कराए और बोले, "बेताल, तुम्हारा संकेत मैं समझ गया। लेकिन याद रखना, लोकतंत्र में व्यंग्य का उद्देश्य किसी का व्यक्तिगत अपमान नहीं, बल्कि राजनीतिक आचरण और सार्वजनिक दावों की पड़ताल होना चाहिए।" बेताल ने उत्तर दिया, राजन! आज निशाना किसी व्यक्ति की निजी जिंदगी नहीं, बल्कि राजनीति की वह शैली है, जिसमें लाल किताब हाथ में दिखाई देती है और जनता उसके विचारों को व्यवहार में तलाशती रहती है।

बेताल ने कथा आगे बढ़ाई, राजन! 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा ने भारतीय संविधान को अंगीकृत किया था। इसे तैयार करने में दो वर्ष, ग्यारह महीने और अठारह दिन लगे। डॉ. भीमराव आंबेडकर की अध्यक्षता वाली प्रारूप समिति ने संविधान के निर्माण में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा के सदस्यों ने इसकी हिंदी और अंग्रेजी प्रतियों पर हस्ताक्षर किए और 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू हुआ। वर्ष 2015 में भारत सरकार ने 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया, ताकि नागरिकों में संविधान और उसके मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सके। विक्रम बोले, "अर्थात् 26 नवंबर संविधान को अंगीकृत करने का दिन है और 26 जनवरी उसके लागू होने का।" बेताल हँसा, बिल्कुल राजन! लेकिन आज राजनीति के रंगमंच पर संविधान की चर्चा कभी-कभी ऐसी दिखाई देती है, जैसे किताब के आवरण से ही लोकतंत्र की पूरी कहानी समझी जा सकती हो। कैमरे सामने आते हैं, संविधान की प्रति उठती है, तस्वीरें प्रकाशित होती हैं और राजनीतिक बहस शुरू हो जाती है कि असली संविधान रक्षक कौन है। मगर एक छोटा-सा प्रश्न पीछे छूट जाता है-क्या संविधान के आदर्श हमारे व्यवहार में भी दिखाई देते हैं?

बेताल ने अचानक शेक्सपियर को याद किया और बोला, राजन! अंग्रेजी साहित्य के महान नाटककार विलियम शेक्सपियर ने अपने नाटक As You Like It में लिखा था 'All the world's a stage, and all the men and women merely players.' अर्थात सारी दुनिया एक रंगमंच है और सभी स्त्री-पुरुष उसके पात्र हैं। यदि शेक्सपियर आज भारतीय राजनीति का दृश्य देखते, तो शायद अपने नाटक में एक नया पात्र जोड़ते-वह नेता जो संविधान की किताब लेकर मंच पर आता है, लोकतंत्र की रक्षा का संवाद बोलता है और फिर चुनावी परिणामों के बाद अगले दृश्य की तैयारी करने लगता है। विक्रम ने कहा, बेताल, संविधान की प्रति हाथ में रखना गलत नहीं है। विपक्ष का कर्तव्य है कि वह सरकार से सवाल पूछे, नागरिकों के अधिकारों की चर्चा करे और लोकतांत्रिक संस्थाओं की जवाबदेही सुनिश्चित करने का प्रयास करे। बेताल ने सिर हिलाया, "राजन! बात बिल्कुल सही है। मगर संविधान की प्रति राजनीतिक प्रतीक बन सकती है, उसकी आत्मा को राजनीतिक प्रचार तक सीमित नहीं किया जा सकता। किताब हाथ में उठाना एक दृश्य है, लेकिन उसके मूल्यों को व्यवहार में उतारना पूरी भूमिका निभाने जैसा है।"



अब बेताल चुनावी राजनीति की ओर मुड़ा। राजन! राहुल गांधी के राजनीतिक जीवन में सफलताएं भी रही हैं और असफलताएं भी। 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों में कांग्रेस को राष्ट्रीय स्तर पर भारी पराजय का सामना करना पड़ा। 2019 में राहुल गांधी अमेठी सीट से चुनाव हार गए, हालाँकि उन्होंने वायनाड से जीत हासिल की। 2024 में उन्होंने रायबरेली और वायनाड दोनों सीटों से जीत दर्ज की और बाद में वायनाड सीट छोड़ दी। इन परिणामों से भारतीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण पाठ सामने आता है-जनता का फैसला किसी भी नेता की राजनीतिक यात्रा को प्रभावित कर सकता है। विक्रम ने कहा, "चुनावी हार लोकतंत्र का सामान्य हिस्सा है।" बेताल बोला, राजन! मैं भी यही कह रहा हूँ। चुनावी हार किसी नेता का स्थायी परिचय नहीं, लेकिन हर हार आत्ममंथन का अवसर अवश्य है। सवाल यह है कि राजनीतिक दल पराजय के बाद अपने संगठन, नेतृत्व, प्रचार और मतदाताओं से संवाद की समीक्षा कितनी ईमानदारी से करते हैं। कभी-कभी चुनावी हार के बाद इतने विश्लेषण होते हैं कि लगता है समीक्षा की समीक्षा करने के लिए भी एक समिति गठित करनी पड़ेगी!

बेताल ने शेक्सपियर के नाटक Julius Caesar की प्रसिद्ध पंक्ति उद्धृत *"The fault, dear Brutus, is not in our stars, but in ourselves.* इसका आशय है कि दोष केवल सितारों या परिस्थितियों में नहीं, बल्कि स्वयं हमारे निर्णयों और कमियों में भी तलाशना चाहिए। बेताल बोला, राजन! इस विचार को भारतीय चुनावी राजनीति पर लागू करके देखिए। हार के बाद परिस्थितियों, प्रचार, संगठन, गठबंधन और चुनावी रणनीति पर चर्चा आवश्यक है। लेकिन क्या किसी दल को यह प्रश्न नहीं पूछना चाहिए कि जनता ने उससे दूरी क्यों बनाई? क्या उसके संदेश में कमी थी? क्या उसका संगठन जमीनी स्तर पर मजबूत था? क्या नेतृत्व मतदाताओं की अपेक्षाओं को समझ पाया? विक्रम ने उत्तर दिया, सही कहा। लोकतंत्र में आत्मालोचना कमजोरी नहीं, राजनीतिक परिपक्वता का संकेत है। बेताल हँसा, तब तो हर राजनीतिक दल में एक 'आत्ममंथन मंत्री' होना चाहिए।

कुछ दूर चलने के बाद बेताल ने सत्ता की महत्वाकांक्षा पर प्रश्न उठाया। राजन! राजनीति में प्रधानमंत्री बनने की इच्छा रखना किसी नेता का लोकतांत्रिक अधिकार है। लेकिन राजनीतिक महत्वाकांक्षा और जनता का जनादेश दो अलग-अलग बातें हैं। सपना नेता देखता है, पर निर्णय मतदाता करता है। विक्रम बोले, सत्ता जनता की अनुमति से मिलती है और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से बदली भी जा सकती है। बेताल ने शेक्सपियर के Macbeth की पंक्तियाँ याद दिलाई *"Life's but a walking shadow, a poor player that struts and frets his hour upon the stage."* अर्थात जीवन रंगमंच पर कुछ समय के लिए अपनी भूमिका निभाने वाले पात्र जैसा है। उसने कहा, राजन! राजनीति की कुर्सी भी ऐसी ही है। आज सत्ता किसी के पास है, कल किसी और के पास हो सकती है। आज किसी सभा में तालियाँ बजती हैं, कल किसी दूसरे मंच पर। नेता भाषण की पटकथा लिख सकता है, लेकिन चुनाव के अंतिम दृश्य का निर्णय मतदाता करता है।

बेताल ने अब अंतिम प्रश्न किया, राजन! यदि कोई नेता संविधान की किताब हाथ में लेकर लोकतंत्र की रक्षा का दावा करे, चुनावी हार के बाद भी आत्मविश्लेषण से बचे और अपने विरोधियों से लगातार जवाब मांगे, तो क्या जनता को उसकी कथनी और करनी के बीच अंतर नहीं देखना चाहिए? विक्रम ने उत्तर दिया, अवश्य देखना चाहिए। मगर यह कसौटी सभी के लिए समान होनी चाहिए। चुनावी जीत किसी नेता को त्रुटिहीन नहीं बनाती और चुनावी हार किसी नेता को सवाल पूछने के अधिकार से वंचित नहीं करती। लोकतंत्र में आलोचना तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए और राजनीतिक जवाबदेही सभी पर लागू होनी चाहिए। बेताल हँसा और शेक्सपियर के Hamlet की प्रसिद्ध पंक्ति दोहराई *"To thine own self be true."* अर्थात् अपने प्रति सच्चे रहो। उसने कहा, राजन! यदि राजनीति में नेता पहले स्वयं से ईमानदार होना सीख लें, तो जनता से ईमानदारी की अपेक्षा करना भी सार्थक हो जाएगा।

इतना कहकर बेताल उड़ चला और विक्रम फिर उसे पकड़ने के लिए आगे बढ़े। पीछे नवंबर की हवा में एक प्रश्न गूँजता रहा-संविधान की प्रति किसके हाथ में है, यह महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन संविधान की मर्यादा किसके आचरण में है, यह उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। 26 नवंबर केवल ऐतिहासिक उपलब्धि का उत्सव नहीं, अपितु वर्तमान के आत्मपरीक्षण और भविष्य के प्रति प्रतिबद्धता का अवसर है। संविधान दिवस की सच्ची सार्थकता तभी है, जब सत्ता पक्ष जवाबदेह बने, विपक्ष जिम्मेदार बने, राजनीतिक दल जनता के फैसले का सम्मान करें और नागरिक अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी समझें। शेक्सपियर का रंगमंच हो या भारतीय लोकतंत्र का चुनावी मंच, पात्र बदलते रहते हैं, संवाद बदलते रहते हैं और सत्ता के दृश्य भी बदल जाते हैं, लेकिन संविधान की मूल भावना स्थायी रहनी चाहिए। क्योंकि लोकतंत्र में संविधान की किताब हाथ में उठाना एक प्रतीक है, लेकिन उसकी आत्मा को अपने आचरण में उतारना ही वास्तविक परीक्षा है।

उत्सवों में नदियां धर्म से नहीं जीवन से जुड़ी हैं



नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर एवं ट्रेवलर

कार्तिक के महीने में पवित्र नदियों में स्नान, तुलसी पूजन और दीपदान का विशेष महत्व होता है। कार्तिक मास के उत्सव, नदी केन्द्रित हैं। अपने आस पास जो भी नदी झील, सरोवर होता हैं। वहाँ स्नान किया जाता है। प्रतिदिन स्नान और तुलसी पूजन के साथ उत्सव नवम्बर को और भी जीवंत करते हैं।

अहोई अष्टमी (1 नवम्बर) पुत्रवती महिलाएं पुत्र की लम्बी आयु और उसके सुखमय जीवन की कामना के लिये निर्जला व्रत रखती हैं। बेटों के लिए अहोई उत्सव व्रत अब बेटियों के लिए भी रखा जाने लगा है यानि संतान के लिए।



रास महोत्सव (5 से 7 नवंबर) माज़ुली नलबारी और असम के सभी क्षेत्र में मनाया जाता है। वैष्णव सत्रों में पारंपरिक लोक नृत्य और रासलीला के द्वारा भगवान कृष्ण के जीवन को प्रदर्शित किया जाता है। धनतेरस (6 नवम्बर) को खूब खरीदारी की जाती है। काली चौदस नरक चतुर्थी (7 नव.) फिर दीपावली उत्सव (8 नवम्बर) धूमधाम से मिट्टी के दिए जलाकर मनाया जाता है। लक्ष्मी जी की पूजा खील बताशे से ही होती है ताकि गरीब अमीर सब करें। लेकिन मेवा, मिठाई खूब खाया जाता है।

दिवाली के अगले दिन पर्यावरण और समतावाद का संदेश देता, गोर्वधन पूजा अन्नकूट (10 नवम्बर) का उत्सव दुनिया के किसी भी कोने में रहने वाला कृष्ण प्रेमी परिवार, सामूहिक रुप से मनाता है। जिसमें 56 भोग बनते हैं।

यम द्वितीया का त्यौहर, भाई दूज, चित्रगुप्त पूजा (कलम दवात पूजा), (11 नवम्बर) मथुरा में बहन भाई यमुना जी में नहा कर मनाते हैं। कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की द्वितीया को विश्राम घाट पर यमराज और यमुना जी का मिलन हुआ था। यमुना जी भाई को मिल कर बहुत प्रसन्न हुईं। उनके लिए स्वयं भोजन बनाया। यमराज बहन के व्यवहार से प्रसन्न होकर बोले कि वह उनसे कोई भी वरदान मांगे। यमुना जी बोली, जो बहन भाई आज के दिन यहां स्नान करेंगे या आज के दिन भाई, बहन के घर जाकर भोजन करेगा, उसे यमपुरी न जाना पड़े। कहते हैं कि विवाह के बाद कृष्ण भी पहली बार सुभद्रा से यहीं मिले थे। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को होने वाली यह पूजा कायस्थ समुदाय के आराध्य देव भगवान चित्रगुप्त को समर्पित है, जो सभी जीवों के कर्मों का लेखा-जोखा रखते हैं।

लाभ पंचमी (सौभाग्य पंचमी) का त्योहार 14 नवंबर को मनाया जाएगा। यह दीपावली उत्सव का अंतिम दिन होता है, जिसे विशेष रूप से गुजरात और व्यावसायिक समुदायों में नए व्यापार की शुरुआत और बही-खातों के पूजन के लिए बेहद शुभ माना जाता है। केरल के पलक्कड़ जिले में स्थित श्री विशालाक्षी समेता श्री विश्वनाथ स्वामी मंदिर में आयोजित होने वाला प्रसिद्ध कल्पथि रथोत्सव (14 नवंबर से 16 नवंबर) मनाया जाएगा। इस 10 दिवसीय वार्षिक उत्सव के अंतिम 3 दिनों का उत्सव सबसे मुख्य चरण होता है, जिसमें विशाल रथों की भव्य शोभायात्रा निकाली जाती है। पश्चिम बंगाल में जगद्धात्री पूजा मुख्य रूप से 15 नवंबर से 19 नवंबर तक मनाई जाएगी। मुख्य पूजा (कार्तिकी शुक्ल नवमी तिथि) 18 नवंबर को होगी। देवी जगद्धात्री को देवी दुर्गा का ही एक शांत स्वरूप माना जाता है, जो पूरे विश्व की रक्षक और पालनकर्ता हैं।

सादगी, पवित्रता, लोकजीवन की मिठास का पर्व 'छठ' (15 नवम्बर) है। छठ पर्व में प्रकृति पूजा सर्वकामना पूर्ति, सूर्योपासना, निर्जला व्रत के इस पर्व को स्त्री, पुरुष और बच्चों के साथ अन्य धर्म के लोग भी मनाते हैं। इन सबसे अलग बिहार, झारखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के जन सामान्य द्वारा किसान और ग्रामीणों के रंगों में रंगी अपनी उपासना पद्धति है। सूर्य, उषा, प्रकृति, जल, वायु सबसे जो कुछ उसे प्राप्त हैं, उसके आभार स्वरुप छठ मइया की कुटुम्ब, पड़ोसियों के साथ पूजा करना है, जल में खड़े होकर डूबते और उगते सूर्य को अर्घ्य देते हैं।

कृष्ण और बलराम कार्तिक महीने की शुक्ल पक्ष की अष्टमी से गाय चराने गए और गोपाल बने। गोपाष्टमी पर्व (17 नवम्बर) यह उत्सव श्री कृष्ण और उनकी गायों को समर्पित है। इस दिन गौधन की पूजा की जाती है। गाय और बछड़े की पूजा करने की रस्म महाराष्ट्र में

गोवत्स द्वादशी के समान है। भगवान कृष्ण के जीवन में गौ का महत्व बहुत अधिक था। उनकी गौसेवा के कारण ही इंद्र ने उनका नाम गोविंद रखा। दक्षिण भारत में भी कार्तिक मास के पावन अवसर पर काकड़ आरती का प्रारंभ परम्परानुसार शरदपूर्णिमा के दूसरे दिन से होता हैं। देवउठनी एकादशी (20 नवम्बर) के अवसर पर काकड़ आरती को भव्य स्वरूप दिया जाता है। तुलसी सालिगराम के विवाह उत्सव को मनाया जाता है। वारकरी सम्प्रदाय के बुजुर्ग बताते हैं कि संत हिरामन वाताजी महाराज ने 365 वर्ष पहले काकड़ आरती की शुरुआत की थी। आरती में शामिल होने के लिए श्रद्धालु प्रातः 5 बजे विटठल मंदिर में आते हैं और भजन मंडलियां पकवाद, झांज, मंजीरों एवं झंडियों के साथ नगर भ्रमण करती है। प्रत्येक मंदिर में सामुहिक काकड़ा जलाकर काकड़ आरती प्रातः 7 बजे तक प्रशाद वितरण के साथ सम्पन्न होती है। उत्तर भारत में प्रभात फेरी निकाली जाती है। अक्षय नवमी (18 नव.) इस दिन मुख्य रूप से आंवले के पेड़ की पूजा की जाती है, क्योंकि माना जाता है कि इसमें भगवान विष्णु और सभी देवी-देवताओं का वास होता है। आंवले के पेड़ के नीचे सात्विक भोजन पकाने और पूरे परिवार के साथ मिलकर खाने का विशेष महत्व है। खाटू श्याम जी का जन्मोत्सव 20 नवंबर को मनाया जाएगा। भीष्म पंचक 20 नवंबर 24 नवंबर तक मनाया जाएगा। यह पांच दिवसीय व्रत कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी (देवउठनी एकादशी) से शुरू होकर कार्तिक पूर्णिमा तक चलता है। देवउठावनी (20 नव.21नव.) एकादशी से सभी मांगलिक कार्य शुरु हो जाते हैं। तुलसीजी और सालिगराम का विवाह उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। सालिगराम के बराती भगवान की बारात में जमकर नाचते हुए तुलसी जी के घर जाते हैं। उत्तर भारत में प्रभात फेरी निकाली जाती है। कार्तिक पूर्णिमा (24 नवंबर) को त्रिपुरारी पूर्णिमा भी कहते हैं। त्रिपुरास राक्षस पर शिव की विजय का उत्सव है। शास्त्रों में वर्णित है कि कार्तिक पूर्णिमा के दिन पवित्र नदी, सरोवर एवं गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, गंडक, कुरुक्षेत्र अयोध्या, काशी में स्नान करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। इसे देव दीपावली गंगा दीपावली के रूप में मनाते हैं। गंगा नदी और देवी देवताओं के सम्मान में घरों में रंगोली बना कर तेल के दियों से सजाते हैं।

महाभारत काल में हुए 18 दिनों के युद्ध के बाद की स्थिति से युधिष्ठिर कुछ विचलित हो गए तो श्री कृष्ण पाण्डवों के साथ गढ़ खादर के विशाल रेतीले मैदान में आए। कार्तिक शुक्ल अष्टमी को पाण्डवों ने स्नान किया और कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी तक गंगा किनारे यज्ञ किया। इसके बाद दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए दीपदान करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दिन गंगा स्नान का और विशेष रुप से गढ़मुक्तेश्वर में स्नान करने का विशेष महत्व है। यह देश भक्ति से भी जुड़ा हैं। इस दिन बहादुर सैनिक जो भारत के लिए लड़ते हुए शहीद हो गए हैं, उन्हें श्रद्धांजलि दी जाती है। गुरू नानक जयंती (24नवंबर) को उत्सव की तरह मनाया जाता है। गुरुद्वारों में शबद कीर्तन होता है और लंगर वरताया जाता है। जैन धर्म का धार्मिक दिवस प्रकाश पर्व है। तमिल नाडु में अरुणाचलम पर्वत की 13 किमी की परिक्रमा की जाती है। यहाँ कार्तिक स्वामी का मंदिर है।

बोइता (छोटी नाव) उत्सव या बोइता वंदना (24 नवंबर) बाली जात्रा कटक एशिया का सबसे बड़ा मेला कार्तिक पूर्णिमा को लगता है। विशाल मैदान! जिसका मुझे अंतिम छोर नजर नहीं आ रहा था जो महानदी के गडगड़िया घाट पर लगता है। बाली जात्रा कटक, 2000 साल पुराने समुद्री संस्कृतिक संबंधों को दर्शाता है। प्राचीन काल में यहां के ओड़िआ नाविक व्यापारी जिन्हें 'साधवा' कहा जाता था। जावा, सुमात्रा, बोर्नियो (इंडोनेशिया), वर्मा (म्यांमार) सिलोन (श्रीलंका) से व्यापार करते थे। कार्तिक पूर्णिमा के दिन से यह 4 महीने के लिए व्यापार के लिए निकलते थे। इस समुद्री यात्रा में हवा इनका साथ देती थी। पाल वाली नाव हवा की दिशा और पवन ऊर्जा पर निर्भर यह नाविक, समुद्री व्यापारी, व्यापार के लिए चल देते थे। इस बड़ी-बड़ी जहाजनुमा नाव को 'बोइतास' कहा जाता है। जब यह व्यापार को जाते थे तो परिवार की महिलाएं उनकी कुशल वापसी के लिए अनुष्ठान करती थीं। जिसे 'बोइता वंदना' कहते हैं।

लोक चाय उत्सव (24,25,26 नवम्बर) को हातिपति टी एस्टेट, बिश्वनाथ चरियाली, असम और अरुणाचल की हरि भरी पहाड़ियों में फोक टी फैस्टिवल एक अनूटा कार्यक्रम है। सामाजिक समरसता का प्रतीक 'वन भोजन' भी कार्तिक मास में आयोजित किए जाते हैं। इसमें कुछ लोग मिलकर अपनी सुविधा के दिन, अपना बनाया खाना लेकर प्राकृतिक परिवेश में पिकनिक मनाते हैं। शाम को पास में जो भी नदी, झील हो वहाँ दीपक जला कर लौटते हैं।

माजुली महोत्सव (27 से 29 नवम्बर) पूर्वोत्तर भारत में दुनिया के सबसे बड़े नदी द्वीप, असम में लुइत नदी के तट पर मनाया जाता है। जो द्वीप की समृद्ध संस्कृति और प्रचुर प्राकृतिक सौन्दर्य को दर्शाता है। रण उत्सव (1 नवंबर से शुरू गुजरात का रण उत्सव अपनी रंगीन कला और संस्कृति के लिए विश्व प्रसिद्ध है यह 7 मार्च तक चलेगा।

भगवान बाल्मिकी आश्रम, रामतीर्थ मंदिर अमृतसर में 3 किमी परीधि का सरोवर है। कार्तिक मास की पूर्णिमा को यहाँ चार दिवसीय मेला लगता है। 'माता सीता की बावली' जहाँ वे स्नान करतीं थीं। ऐसी मान्यता है कि उसमें नहाने से संतान की प्राप्ति होती है और वहां ईंटो का घर बनाने से अपना घर बन जाता है। सीता जी को भी तो असहायावस्था में भगवान बाल्मीकि पिता तुल्य का घर मिला और वे लव कुश पुत्रों की मां बनी।

कार्तिक मास में तीर्थस्थान पर स्नान करते हैं। धर्म और लोककथाओं के बाद उत्सव की एक महत्वपूर्ण उत्पत्ति कृषि है। धर्म और लोककथाओं के साथ, उत्सव में नदियों का भी महत्व हैं। धार्मिक स्मरणोत्सव और अच्छी फसल के लिए धन्यवाद दिया जाता है। रवि की फसल की बुआई हो जाती है फिर बड़ी श्रद्धा और उत्साह से उत्सव मनाते हैं। इन सभी उत्सवों में प्रकृति वनस्पति और जल है। इसी तरह अब हमें नदियों को प्रदूषित होने से युद्ध स्तर से बचाना होगा क्योंकि नदी नहीं तो हम नहीं।

धनतेरस-दिवाली 2026 : उच्च गुरु का गोचर खोलेगा विवाह, संतान और सफलता के द्वार!



सपना जैन
वैदिक ज्योतिषी एवं अंकशास्त्री

इस साल धनतेरस और दिवाली के पावन अवसर पर गुरु ग्रह (Jupiter) की स्थिति अत्यंत शुभ और फलदायी बनी हुई है। ज्योतिषीय गणना के अनुसार, गुरु महाराज इस समय अपनी उच्च राशि 'कर्क' (Cancer) में विराजमान हैं। जब धन, समृद्धि, भाग्य और ज्ञान का कारक ग्रह स्वयं अपनी उच्च राशि में हो, तो उसका शुभ प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। धनतेरस और दिवाली का समय महालक्ष्मी और कुबेर देव की कृपा का समय होता है, और गुरु की यह उच्च स्थिति इस पर्व को आर्थिक और आध्यात्मिक रूप से और भी विशेष बनाती है।

इस धनतेरस पर गुरु के इस गोचर के मुख्य शुभ फल

• आर्थिक समृद्धि और धन वृद्धि : कर्क राशि में उच्च का गुरु धन के आगमन के नए और स्थायी मार्ग खोलता है। व्यवसाय में फंसा हुआ पैसा वापस मिल सकता है या व्यापार में बड़ा मुनाफा हो सकता है।

• निवेश और बचत : धनतेरस पर सोना, चांदी, प्रॉपर्टी या शेयर मार्केट में किया गया निवेश लंबी अवधि में बहुत बड़ा रिटर्न दे सकता है।

• पारिवारिक सुख और शांति : गुरु के कर्क राशि में होने से घर-परिवार में मांगलिक कार्य, आपसी सामंजस्य और खुशहाली आती है।

• ज्ञान, सलाह और करियर में तरक्की : टीचिंग, कंसल्टेंसी, फाइनेंस, एस्ट्रोलहजी या कंटेंट-मीडिया से जुड़े लोगों को विशेष सम्मान और सफलता मिलती है।

किन लोगों को मिलेंगे इसके विशेष लाभ?

उच्च का गुरु सामान्यतः सभी के लिए शुभ होता है, लेकिन कुछ विशेष लग्नों/राशियों और ग्रहों की स्थिति वाले लोगों को इसका सबसे ज्यादा लाभ मिलेगा-

क) इन राशियों/लग्नों के लिए सबसे ज्यादा शुभ -

कर्क (Cancer) : गुरु आपकी अपनी ही राशि (प्रथम भाव) में उच्च का होकर विराजमान है, जो आपके आत्मविश्वास, सेहत और समग्र भाग्य में भारी वृद्धि करेगा।

वृश्चिक (Scorpio) : गुरु आपके नवम भाव (भाग्य स्थान) को प्रभावित करेगा जिससे अटके काम बनेंगे, विदेश यात्रा के योग बनेंगे और भाग्य का पूरा साथ मिलेगा।

मीन (Pisces) : गुरु आपके पंचम भाव (ज्ञान, संतान और अचानक धन लाभ) में उच्च का है, जो विद्यार्थियों और क्रिएटिव फील्ड के लोगों के लिए बहुत शुभ है।

वृषभ (Taurus) व कन्या (Virgo) : गुरु की शुभ दृष्टि आपके धन और आय भाव पर पड़ने से इनकम सोर्स तेजी से बढ़ेंगे।

ख) जिनकी गुरु की महादशा या अंतर्दशा चल रही हो : जिन जातकों की कुंडली में इस समय बृहस्पति की महादशा या अंतर्दशा चल रही है, उन्हें इस दिवाली के आसपास कोई बड़ी खुशखबरी या आर्थिक लाभ मिल सकता है।

इस उच्च गुरु गोचर के ३ सबसे चमत्कारी प्रभाव और ज्योतिषीय विश्लेषण -

• विवाह के योग और अड़चनें (Marriage Prospects) : यदि आपके या आपके किसी अपने के विवाह में बात बार-बार बनते-बनते बिगड़ रही है, रिश्ते आते हैं लेकिन कोई न कोई बाधा आ जाती है, तो यह उच्च गुरु का गोचर आपके लिए बेहद चमत्कारिक सिद्ध हो सकता है। इस समय एक विशेषज्ञ ज्योतिषी आपकी कुंडली में सप्तम भाव (विवाह भाव), सप्तमेश और कारक ग्रह शुक्र की स्थिति का सूक्ष्म विश्लेषण करता है। वे यह जांचते हैं कि वर्तमान में चल रही आपकी महादशा या अंतर्दशा इस उच्च गुरु के गोचर के साथ मिलकर विवाह के मार्ग को कैसे खोल रही है, जिससे आपकी कुंडली के सटीक गणित के आधार पर यह पता चल सके कि आपके लिए शहनाई बजने का सही और पक्का समय कब आ रहा है।

• संतान पक्ष (Childbirth - Progeny) : जब बात संतान



प्राप्ति या वंश वृद्धि की हो, तो सामान्य भविष्यवाणियां काम नहीं आतीं। एक विशेषज्ञ ज्योतिषी इस उच्च गुरु गोचर का पूरा लाभ दिलाने के लिए आपकी मुख्य जन्मपत्री के साथ सप्तमांश (D-7 Chart - संतान का विशेष वर्ग चार्ट) का बारीकी से अध्ययन करता है। वे पंचम भाव, पंचमेश और कारक ग्रह गुरु की डिग्री का सूक्ष्म मिलान करके यह निकालते हैं कि वर्तमान महादशा या अंतर्दशा इस उच्च गोचर के साथ किस सटीक समय पर ओवरलैप कर रही है, जिससे गर्भधारण या संतान सुख का सही और अनुकूल समय स्पष्ट किया जा सके।

• नजर दोष और नकारात्मक ऊर्जा (Evil Eye-Aura Blockages) : अक्सर ग्रहों के शुभ गोचर का फल तब रुक जाता है जब रास्ते में बुरी नजर, ऊर्जा के अवरोध या छिपे हुए दोष आड़े आ रहे होते हैं। एक प्रोफेशनल ज्योतिषी आपकी कुंडली में राहु-केतु के अक्ष और लग्न/लग्नेश की स्थिति को स्कैन करके यह पता लगाता है कि व्यापार या स्वास्थ्य में आ रही बाधाएं किसी बाहरी नजर का असर हैं या आंतरिक ग्रहों की कमजोरी। इसके बाद, वे छठे, आठवें और बारहवें भावों पर उच्च गुरु की दृष्टि का मिलान करके गोचर की उस विशेष सुरक्षा विंडो की गणना करते हैं, जो आपके आउरा को मजबूत कर इन सभी नकारात्मक प्रभावों को बेअसर करती है।

इस शुभ गोचर के अचूक और विशेष उपाय -

लोग अक्सर यह सलाह देते हैं कि धनतेरस और दिवाली पर सोना खरीदो, चांदी खरीदो... लेकिन यदि आप जीवन की वास्तविक बाधाओं (विवाह, संतान, कर्ज या नजर दोष) से मुक्ति पाना चाहते हैं, तो यह उपाय उन सभी भौतिक खरीदारी से कहीं अधिक शक्तिशाली और असरदार सिद्ध होता है।

101 दीप दान (Deep Daan) : दिवाली के पावन दिन मां लक्ष्मी और भगवान विष्णु के चरणों में 101 दीपक का दान अवश्य करें। यह आपकी बंद किस्मत के तालों को खोलने और घर में स्थायी महालक्ष्मी की स्थापना का सबसे अचूक विधान है। दीप दान करते हुए अपनी कुंडली अनुसार मंत्र जप किया जाना परम शुभता का प्रतीक माना जाता है।

क्या आपकी कुंडली में भी छिपे हैं ये शुभ योग या कोई छुपा हुआ ग्रह दोष?

ग्रहों का यह दुर्लभ उच्च गोचर आपको तभी पूरा फल देगा, जब आपकी व्यक्तिगत जन्मकुंडली के ग्रह और दशाएं इसके साथ संरेखित (Align) होंगी।

गलत उपायों या केवल सामान्य राशिफल पढ़कर निर्णय लेने से सही परिणाम नहीं मिलते। क्या आपके विवाह की तारीख तय नहीं हो पा रही? क्या संतान सुख में कोई अनजानी बाधा है? या करियर और पैसों की तंगी आपको परेशान कर रही है?

ज्योतिष कोई जादू नहीं, बल्कि आपकी कुंडली के छिपे हुए उत्तरों को पढ़ने का सटीक विज्ञान है! सही समय पर सही ज्योतिषीय मार्गदर्शन आपकी बंद किस्मत के दरवाजे खोल सकता है।

नोट : इस लेख में प्रस्तुत विश्लेषण लेखक के पारंपरिक ज्योतिषीय ज्ञान एवं व्याख्याओं पर आधारित हैं।

मिलेट्स से सौंदर्य उत्पाद बना रहीं मीनाक्षी वर्मा



मोटे अनाज यानी मिलेट्स से भोजन ही नहीं, बल्कि सौंदर्य उत्पाद भी तैयार किए जा रहे हैं। कंकरखेड़ा निवासी मीनाक्षी वर्मा ने करीब 23 महीने के शोध और प्रयोग के बाद 'बिमिरा नेचुरल सॉल्यूशन' के तहत प्राकृतिक हेयर, स्किन और बहडी केयर उत्पादों की श्रृंखला तैयार की है। इनमें कोदो और सांवा जैसे छोटे मिलेट्स का इस्तेमाल किया गया है।

मीनाक्षी ने अपने उत्पादों को तीन श्रेणियों में बांटा है। हेयर केयर में शैंपू, कंडीशनर और हेयर सीरम, स्किन केयर में फेसवॉश, फेस सीरम, डे क्रीम, सनस्क्रीन और नाइट क्रीम तथा बॉडी केयर में साबुन, एप्सम साल्ट और मुल्तानी मिट्टी आधारित उत्पाद शामिल हैं। उन्होंने राजकीय इंटर कॉलेज, मेरठ के मैदान में आयोजित खादी महोत्सव में अपने उत्पाद प्रदर्शित किए। मीनाक्षी ने हैदराबाद स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मिलेट रिसर्च (आईआईएमआर) से दो बार प्रशिक्षण लिया। उत्पादों के फॉर्मूलेशन और गुणवत्ता की जांच के लिए प्रयोगशाला परीक्षण भी कराए गए हैं।

असिस्टेंट प्रोफेसर की नौकरी छोड़ शुरू किया कारोबार - मीनाक्षी वर्ष 2023 तक भोपाल के एक मैनेजमेंट कॉलेज में असिस्टेंट प्रोफेसर और एडमिनिस्ट्रेशन हेड थीं। करीब दस साल के बिजनेस कम्युनिकेशन अनुभव के बाद उन्होंने नौकरी छोड़कर उद्यम शुरू किया। मिलेट्स को बढ़ावा देने के राष्ट्रीय अभियान से उन्हें इस क्षेत्र में काम करने की प्रेरणा मिली। उनकी माता राधा रानी कंपनी की सह-संस्थापक हैं। कंपनी एमएसएमई और स्टार्टअप इंडिया में पंजीकृत है। मीनाक्षी अब मिलेट्स के प्रसंस्करण से निकलने वाले कृषि अपशिष्ट से पर्यावरण अनुकूल पैकेजिंग विकसित करने पर भी काम कर रही हैं। इसके साथ ही औषधीय पौधों की खेती और नए हर्बल उत्पादों की श्रृंखला शुरू करने की योजना है।

कर्ज के अंधेरे से निकलीं सीमा सागर

बुलंदशहर। कोरोना महामारी में कारोबार बंद होने, कर्ज बढ़ने और जमीन बेचने की नौबत आने के बावजूद खुर्जा के उस्मापुर गांव की सीमा सागर ने हार नहीं मानी। मुख्यमंत्री माटीकला रोजगार योजना से मिले पांच लाख रुपये के ऋण और 1.25 लाख रुपये की सब्सिडी से उन्होंने कारोबार को दोबारा खड़ा किया। आज उनके कारोबार का टर्नओवर 80 लाख रुपये से अधिक है और उनकी फैक्टरी में 31 लोगों को रोजगार मिल रहा है।

सीमा के पति मनोज कुमार पहले सिरेमिक पॉटरी फैक्टरी में नौकरी करते थे। परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए दोनों ने वर्ष 2018 में सड़क किनारे क्रॉकरी बेचकर कारोबार शुरू किया। धीरे-धीरे उन्होंने मशीनें खरीदीं और डाइनिंग सेट, कप-प्लेट सहित विभिन्न उत्पाद बनाने लगे।

कोरोना महामारी ने कारोबार को बड़ा झटका दिया। आमदनी बंद हो गई, कर्ज बढ़ता गया और परिवार को जमीन तक बेचनी पड़ी। मुश्किल हालात में भी दंपती ने हिम्मत नहीं छोड़ी। वर्ष 2023 में मुख्यमंत्री माटीकला रोजगार योजना के तहत उनका ऋण स्वीकृत हुआ, जिससे कारोबार को नई शुरुआत मिली।



आज उनकी फैक्टरी में कड़ाही, जग, गिलास, सुराही, वाटर बॉटल, प्लेट और सजावटी सामान सहित विभिन्न उत्पाद तैयार होते हैं। सीमा ने एमएसएमई के तहत पंजीकरण कराया और ग्रेटर नोएडा में आयोजित उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो में निशुल्क भाग लेने का अवसर मिला। यहां उन्होंने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए और करीब छह लाख रुपये का कारोबार होने की जानकारी दी।

सीमा अब डिजिटल मार्केटिंग के माध्यम से अपने उत्पादों को बड़े बाजार तक पहुंचाना चाहती हैं। उनका बेटा भी इस काम में सहयोग कर रहा है। उनकी यात्रा संघर्ष, मेहनत और सरकारी योजनाओं के जरिए स्वरोजगार की संभावनाओं को दर्शाती है।

College Code No. 1549 | NIOS NO: 210316 | Regd.No. 2011 | ESTD. 1996






For the best academic career and sure success in the board examination

"व्यक्तित्व निर्माण की संस्कारशाला"

माँ श्री महाकाली विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज

C.B.S.E. PATTERN, NEP BASED, NCERT SYLLABUS, U. P. BOARD



Offered Courses

सीधे डॉक्टर बनें Diploma in Naturopathy	Duration 2 Years course, Six Month Internship (योग्यता कक्षा 12 उत्तीर्ण)
नौकरी हेतु पहली बार सरकार द्वारा NTT कोर्स Certificate in Early Childhood Care & Education	Duration 1 Year (योग्यता कक्षा 10 उत्तीर्ण)
होम्योपैथी में भविष्य बनायें Certificate in Homeopathy Dispensing	Duration 1 Year (योग्यता कक्षा 10 उत्तीर्ण)
पढ़ाई के साथ सरकारी कंप्यूटर कोर्स Certificate in Computer Application	Duration 1 Year (योग्यता कक्षा 10 उत्तीर्ण)
सरकारी नौकरी हेतु Certificate in Yoga Teacher Training Programme	Duration 1 Year (योग्यता कक्षा 12 उत्तीर्ण)

English Medium

PLAY GROUP AND DAY BOARDING WITH ALL FACILITIES

- Lecture room for Higher Classes.
- Leadership Programme through Scout-Guide & NSS.
- Charitable Academic and Educational Programme for all.
- Our target is reach to unreachable.
- Minimum fee with high moral value education.
- Our moto is making personality & all round development of child.

OUR BRANCHES

1. NPS ACADEMY, VIJAY NAGAR, SEC-B, NILMATHA ESTD 1996.
2. MAA SRI MAHAKALI VIDYA MANDIR INTER COLLEGE HARIHARPUR, NILMATHA, LUCKNOW. ESTD. 2003
3. DISTANCE LEARNING CENTRE FOR REACH TO UNREACHED NIOS- STUDY CENTRE CODE - 2103016
4. SUSHEELA CONVENT, JAWAHARNAGAR, PANT NAGAR, UTTRAKHAND ESTD. 2003.
5. GREEN VALLEY SENIOR SECONDARY SCHOOL PITHORAGARH, UTTRAKHAND. ESTD. 2003
6. MAA SRI MAHAKALI INSTITUTE OF PROFESSIONAL EDUCATION ESTD. 2002
   BA, BA (JMC), M.COM, M.LIB, MBA, BCA, DBA, DCA, ADCA






9450609011, 8419018191, 9415578649 Dr. Reeta Bhatt (Principal)

mahakaliconvent123@gmail.com | maasrimahakalividyamandir@gmail.com | www.maamahakaligroup.org

Add:- Vijay Nagar, Near Saheed Path - Neelmatha, Lucknow Uttar Pradesh

follow us : # mahakaliconvent

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2026-27-28

प्रेरणा विमर्श 2026 के समापन समारोह की झलकियां







